

(मासिक)

# ज्ञानामृत

वर्ष 57, अंक 03, जून, 2021  
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

परमपिता शिव परमात्मा  
भक्ति-ज्ञान-दाता



परोपकारी

स्वच्छता

दृष्टा

भारत से कुशलता

एकता एवं मित्रता

पशुपति

सादगी एवं शालीनता

आज्ञाकारी एवं वफादार

दिव्यता एवं अलौकिकता

हर्मितपुखता एवं गम्भीरता

निर्भयता एवं सहनशीलता

प्रेम एवं यशस्वता की मूर्त

मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती





काठमांडू- राष्ट्रीय दिवस के उपलक्ष्य में नेपाल की महामहिम राष्ट्रपति बहन विद्या देवी भंडारी, ब्रह्माकुमारी संस्था की ओर से ब्र. कु. रामसिंह भाई को 'प्रबल जनसेवा श्री अवार्ड' से सम्मानित करते हुए।



रीवा- आध्यात्मिक कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मध्यप्रदेश विधानसभाध्यक्ष भ्राता गिरीश गौतम। मंचासीन हैं ब्र.कु. प्रकाश भाई, ब्र.कु. लता बहन और वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष भ्राता इरफान खान।



रायपुर (शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर)- दादी हृदयमोहिनी जी को श्रद्धांजलि देते हुए छत्तीसगढ़ महिला आयोग की अध्यक्ष डॉ. किरणमई नायक। साथ में हैं ब्र.कु. कमला बहन तथा ब्र.कु. सविता बहन।



मण्डी- हि. प्र. के शिक्षामंत्री ठाकुर गोविन्द सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. दीपा बहन तथा ब्र.कु. टीना बहन। साथ में सांसद भ्राता हीरा लाल जी।



राधोपुरा- नवनिर्मित परमात्म-अनुभूति संग्रहालय का उद्घाटन करते हुए बिहार के वन, पर्यावरण एवं जलवायु मंत्री भ्राता नीरज कुमार सिंह 'बबलू', ब्र.कु. किरण बहन, जिला अध्यक्ष भ्राता रामकुमार राय, ब्र.कु. रंजू बहन, ब्र.कु. रामसिंह भाई, ब्र.कु. भगवती बहन, ब्र.कु. सृजना बहन, ब्र.कु. दीपा बहन, पूर्व जिला अध्यक्ष भ्राता अनिल कुमार, समाजसेवी भ्राता सचिन तथा अन्य।



भुवनेश्वर (मुक्तेश्वर मार्ग सेंटर)- सुप्रसिद्ध गायक पद्मश्री भ्राता अनूप जलोटा को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. इंदुमती बहन। साथ में ब्र.कु. विजय भाई, ब्र.कु. शांति बहन तथा अन्य।

# शक्तिदल की सेनानी - मातेश्वरी जगदम्बा

**ह**म लोगों को अष्ट शक्तियों की बात बताते हैं, वे शक्तियाँ व्यवहारिक रूप में हमने मम्मा में देखीं। एक बल, एक भरोसा। सारी दुनिया को एक करो और मम्मा को एक करो। वह शक्तिदल की सेनानी – उनके चलने से, बोल-चाल से ऐसा लगता था, यह कमाण्डर है, एक बहुत बड़ी सेना की। कैसी भी परिस्थिति हो लेकिन बिल्कुल अभय। इसलिए उनको आदि शक्ति कहा जाता है। मम्मा सबके सामने उदाहरण है। जब मैं पहली बार मधुवन आया तो बाबा के दर्शन हुए, मम्मा के भी दर्शन हुए। गद्गद् हो गया। उनकी थपथपाहट मिली, दृष्टि मिली, मधुर मुस्कान भरी सूरत देखी। वे पवित्रता, योग और धारणा की मूर्ति थी। देखता ही रह गया कि ये सरस्वती हैं। मम्मा की लौकिक माँ से मेरा परिचय कराया गया और मैंने देखा कि मातेश्वरी जी की माँ, उनको कहती हैं 'माँ', बाबा की लौकिक युगल जशोदा वह मम्मा को 'माँ' कह रही हैं। सबका प्रेम, सम्मान, श्रद्धा, भक्ति भावना हमने मम्मा में देखी। ऐसा निर्मल जीवन था मम्मा का जो देखते-देखते आदमी आश्चर्यानन्द हो जाता था कि कितना सुन्दर यह जीवन है!

मम्मा ने सब सहन किया, सामना भी किया। हर शक्ति उनके जीवन में थी। मैंने देखा कि बहुत-से लोग



## अमृत-सूची

● शक्तिदल की सेनानी - मातेश्वरी जगदम्बा	3	● सहज राजयोग - सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति	21
● तीन दोष (सम्पादकीय)	5	● साया साथ रहेगा	24
● श्रद्धांजलि	6	● ईर्ष्या की अग्नि में जलता मानव	25
● भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम एम. वेंकैया नायडू जी ने जारी किया ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व प्रमुख दादी जानकी का पोस्टल स्टैम्प	9	● क्रोध से मुक्ति कैसे हो?	26
● मम्मा के व्यक्तित्व में दिव्यता थी	13	● पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है	27
● माँ जगदंबा की अलौकिक दृष्टि से मन हुआ भावविभोर	15	● समाने की शक्ति	29
● आध्यात्मिक शिक्षा की उपयोगिता	17	● सचित्र सेवा-समाचार	30
● मिली ऊपर वाले की सही पहचान	18	● धैर्य का फल मीठा	32
		● श्रद्धांजलि	33
		● भोजन पर विचारों का प्रभाव	34



विकारों से तपे हुए, काम से जले हुए, क्रोध विकार से भरे हुए, जो यह समझते थे कि हम शुद्ध नहीं बन सकते, हम तो महाअसुर हैं, हमें कौन पवित्र बना सकता है, वे भी मम्मा से एक-दो मिनट की मुलाकात में बदल गए। मम्मा के सामने जाकर बैठते ही उनको जीवन में पहली बार यह अनुभव हुआ कि पवित्रता की शीतलता क्या होती है? निर्विकार जीवन का आनन्द क्या होता है? मन में अशुद्ध विचार न आएँ वह स्थिति क्या होती है? चाहे एक सेकण्ड या एक मिनट के लिए अनुभव हुआ पर उनको यह निश्चय तो बैठा कि ये इतनी महान आत्मा हैं! इसने कुछ बोला नहीं, हमने इनको केवल निहारा है, पर लगता है यह माँ हैं, इसकी शरण हम लें तो हमारा सारा जीवन पवित्र हो जायेगा।

मैं जैसे-जैसे ज्ञानमार्ग में आगे बढ़ा कई प्रत्यक्ष अनुभव हुए। एक बार मम्मा अमृतसर में आई हुई थीं। वहाँ लोग काफी खिलाफ हो गए थे। आश्रम का दरवाजा बन्द कर लिया गया था ताकि मम्मा को कोई नुकसान न पहुँचाये। लोग धक्का देकर तोड़ने, खोलने की कोशिश कर रहे थे, आखिर दरवाजा खोल दिया गया, उनमें से दो-तीन को बातचीत के लिए अन्दर बुलाया गया। वे भागते-भागते ऊपर, जहाँ मम्मा गद्दी पर योग में बैठी थी वहाँ चले गए और सामने जाकर बैठ गये। आये थे झगड़ा करने पर चुपचाप भीगी बिल्ली की तरह मम्मा के सामने बैठ गए। मम्मा को देखते रह गए। मम्मा स्नेह से योग के प्रकम्पन दे रही थीं। वे पूर्ण शान्त हो गए। लग रहा था कि उनका मन वहाँ से उठने का नहीं है। पर बाहर उनका इन्तज़ार हो रहा था। काफी बड़ा मजमा था। करीब एक हजार लोग होंगे। सब इस इन्तज़ार में थे कि ये कुछ लोग जो अन्दर आए हैं, क्या बात करके आते हैं, इसलिए उनको जाना पड़ा। बाहर गए तो सब लोगों ने उनको घेर लिया। सब गुस्से में थे। मैं साक्षी होकर देख रहा था। मम्मा के व्यक्तित्व ने उन पर जादू किया। मम्मा ज्ञान, योग, धारणा, पवित्रता में साक्षात् सरस्वती थी। वे अपने साथियों से बोले – अरे भाई, तुम खुद जाकर

मम्मा को देख लो, इनकी मम्मा बिल्कुल ठीक हैं, एकदम पवित्र, साक्षात् देवी हैं। लोगों ने कहा – अरे, इन पर भी जादू हो गया। सच कहते हैं कि ओम मण्डली में जादू है। यह कौन-सा जादू था? ज्ञान का, योग का, धारणा का, पवित्रता का। मम्मा ने उसकी साधना की थी। उनके व्यवहारिक जीवन का जो प्रभाव पड़ता था उसकी तुलना कोई हो नहीं सकती।

देहली में एक व्यक्ति अपनी पत्नी की शिकायत लेकर मम्मा से मिलने गया। मम्मा के सामने जाकर खड़ा हो गया। मम्मा ने कहा – बैठो, बच्चे, बैठो, मीठे बच्चे, बैठो। वह बैठ गया, मम्मा को देखता रहा, कुछ नहीं बोला, कोई शिकायत नहीं की। उसने यही कहा कि मम्मा से मिल लेने पर गलतफहमी रह ही नहीं सकती। उस दिन से वह मम्मा का भक्त बन गया। बिल्कुल बदल गया। जो विकारों के लिए हा-हाकार करता था, उसका परिवर्तन हमने सामने देखा। कितने प्रमाण दूँ, व्यवहारिक जीवन में जो मैंने देखे। यह तो जीवन गाथा ही अलग है कि मम्मा के सामने किस प्रकार की परिस्थितियाँ आईं, पर मम्मा अपनी धारणा के कारण अभय, निर्भय, धैर्यवान रही। इसलिए तो देवी की शेर पर सवारी दिखाते हैं। मम्मा ने कोर्ट में भी हंगामे का सामना किया। उस समय कौन सहारा था, किस आधार पर हिम्मत आई? एक निश्चय के बल से, शिव बाबा के बल से। शिव बाबा के कार्य में कोई रुकावट डाल नहीं सकता, यह निश्चय उनको पूर्ण था। ■■■





# तीन दोष

**आ**ज लोग अन्न के मामले में इस बात पर तो ध्यान देते हैं कि स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से वह सम्पूर्ण हो अर्थात् मनुष्य की आयु, उसके धन्धे और उसके शरीर के वजन से उसका सही मेल हो परन्तु इस पहलू पर ध्यान नहीं देते कि वह ऐसा भी हो कि हमारे मस्तिष्क को उत्तेजित न करे, हमारे स्नायुमंडल में तनाव न लाए, हमारे शरीर में आलस्य पैदा न करे और सुषुप्त वासनाओं को न भड़काए।

## नहीं की गई अन्न के मानसिक तथा परा-मानसिक पहलू की छान-बीन

करोड़ों रुपये की लागत से प्रायः हर देश में इस विषय पर शोध कार्य किया गया है कि किस मनुष्य के लिए, कौन-से और कितनी मात्रा में विटामिन, खनिज लवण, प्रोटीन तथा शर्करा चाहियें। परन्तु, इस बात पर ध्यान नहीं दिया गया कि किस पदार्थ के सेवन से मनुष्य के मानसिक सन्तुलन पर क्या प्रभाव पड़ता है। पाश्चात्य औषधि विज्ञान के अनुसार डॉक्टर लोग रोगी को यह तो कहते हैं कि यदि वह हृदयरोग से ग्रस्त है तो ऐसे पदार्थ अपने भोजन में सम्मिलित न करे जो कि चर्बी या रक्तचाप को बढ़ाने वाले हों परन्तु उस चिकित्सा पद्धति में यह कमी है कि उसमें अन्न के मानसिक तथा परा-मानसिक पहलू की छान-बीन नहीं की गई। आज जब लोग डॉक्टरों के पास जाकर अनिद्रा, इनसोमनिया, तनाव या विचारों के अनियंत्रण की अवस्था को ठीक करने के लिए कोई औषधि-उपचार पूछते हैं, तब तो डॉक्टर उन्हें कहते हैं कि वे कहवा (कॉफी), चाय, सिरका इत्यादि का सेवन कम करें या न करें परन्तु उन्हें इस बात का स्पष्ट तथा निश्चयात्मक ज्ञान नहीं है कि हरेक खाद्य पदार्थ का जहाँ एक शारीरिक अथवा पौष्टिक पहलू होता है, वहाँ उसका मानसिक अथवा चारित्रिक पहलू भी होता है।

इसी अज्ञान का ही एक परिणाम है कि वे मनुष्य को अण्डा, माँस, मछली, प्याज, लहसुन इत्यादि खाने के लिए निस्संकोच परामर्श दे देते हैं। वे नहीं जानते कि यद्यपि इन पदार्थों से मनुष्य के शरीर को वृद्धि अथवा शक्ति के तत्व प्राप्त होते हैं तथापि इनसे मनुष्य में मानसिक अपवित्रता तथा भावनात्मक अस्थिरता बढ़ती है।

## तीन प्रकार का भोजन

दूसरी ओर, भारत में आध्यात्मिक मनीषी अथवा साधना-परायण लोग अन्न के इस (मानसिक-आध्यात्मिक) पहलू पर अधिक बल देते आए हैं। अपना पेट भरने के लिए दूसरे जीवों की हत्या उन्हें सदा अखरती रही है और इसका वे हर तरीके से विरोध करते आये हैं क्योंकि वे समझते थे कि इससे मनुष्य की स्वार्थ भावना को बढ़ावा मिलता है, उसके स्वभाव में दयालुता और करुणाशीलता के सदगुणों का उत्तरोत्तर हास होता है, दूसरों के प्रति स्नेह और सद्भाव में कमी आती है और मनुष्य, मनुष्यता के ऊँचे पद से गिरते-गिरते वन्य पशुओं के समतल पर आ जाता है जिसका अन्ततोगत्वा परिणाम यह होता है कि संसार में मनुष्यता के स्थान पर दानवता और नागरिकता के साथ उच्छृंखलता तथा अवैधानिकता पनपते हैं। इसी प्रकार, उन्होंने यह भी देखा कि ऐसे पदार्थ भी हो सकते हैं कि जिनको खाने से मनुष्य के मन में उकसाहट हो या उनसे तन्द्रा, निद्रा, मूढ़ावस्था, इन्द्रिय लोलुपता, चंचलता इत्यादि की अवस्था पैदा हो। अतः उन्होंने इस दृष्टिकोण से भोजन को सात्त्विक, राजसिक और तामसिक तीन प्रकार का बताया है और अन्न के तीन दोष भी माने हैं जिनका हम नीचे उल्लेख कर रहे हैं –

## अन्न के तीन दोष

श्रुतियों में अन्न के बारे में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण



## प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका इशू दादी जी (दादी पूर्ण शान्ता) का अव्यक्तारोहण



प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका, प्राण प्यारे बापदादा की अति लाडली, यज्ञ की स्थापना के समय से बाबा-मम्मा के साथ रहे आदिरत्नों में से एक, सदा यज्ञरक्षक बन भोलेनाथ शिवबाबा के यज्ञ की भण्डारी को सम्भालने वाली, साकार मात-पिता और दीदी-दादी के संग विशेष हीरो पार्ट बजाने वाली, त्यागी, तपस्वीमूर्त, आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार, सर्व की स्नेही, राजयोगिनी ईशू दादी जी, दिनांक 6 मई, 2021 सतगुरुवार के दिन, सायं 8 बजकर 5 मिनट पर 93 वर्ष की आयु में अपना पुराना शरीर छोड़, प्यारे बापदादा की गोद में समा गई।

सिंध-हैदराबाद में जब ओममंडली की शुरुआत हुई तब आपकी उम्र 7 वर्ष की थी। बाबा की मुरली बहुत तीव्र गति से चलती थी, आप उनके नोट्स लेती थी। इतनी तीव्र गति से चलती मुरली लिखने के लिये आपने अपनी निशानियां बनाई, जैसे धृतराष्ट्र तो सिर्फ 'धृ' लिख लिया, सृष्टि तो 'सृ' लिख लिया। इस प्रकार अपनी ही शॉर्टहैंड बनाई। आपको यह भी ख्याल रहता था कि बाबा का एक भी अक्षर मिस ना हो। और कोई नहीं था जो बाबा की इतनी स्पीड वाली मुरली नोट कर सके, यह भी बाबा की टचिंग थी। बाबा आपको कहते थे कि 11:00 बजे तक मुरली लिखकर तैयार करनी है। सबसे पहले यह काम करो क्योंकि 11:00 बजे तक पोस्ट जाने वाली है, तो खुशी-खुशी में लिख कर आप भेजते थे। बाबा कहते थे, जब सबको मुरली सुनने को मिलेगी तो बहुत सेवा होगी। आप बाबा को कहते थे कि आज आपने बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाई, हमने सब नोट की हैं। फिर मम्मा कहती कि जो नोट किया है वह सुनाओ। जिस भवन में मम्मा रहती थी वहां जाकर आप सुनाते तो सब तालियां बजाते, खुश होते थे।

बाबा जो लाल अक्षरों में पत्र लिखते थे उस पत्र पर आप नीले अक्षरों में, हिंदी जानने वालों के लिये हिंदी अक्षर लिखती थी और जो सिंधी जानने वाले होते थे उनके पत्रों में सिंधी लिखती थी ताकि सहज समझ में आ सके। दादी प्रकाशमणि की आप राइट हैंड थी। दादी ने आपको गंभीर रहना सिखाया कि कोई भी बात किसी को सुनानी नहीं है। स्वयं बापदादा ने भी मुरली में आपकी गंभीरता की बहुत महिमा की है। ऐसी एकनामी और इकानमी की अवतार, न्यारी और प्यारी, रमणीक और अंतर्मुखी तथा सर्व गुणों की मूर्त, महान आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

शब्द आये हैं –

आहार शुद्धौ सत्त्व शुद्धि, सत्त्व शुद्धौ ध्रुवास्मृति।

ध्रुवास्मृति तु उपलम्भे सर्व ग्रन्थीनि विप्र मोक्षः।

इसका अर्थ यह है कि यदि मनुष्य का आहार शुद्ध हो तो अन्ततोगत्वा वह स्मृति-स्वरूप में स्थित हो सकता है क्योंकि वह परमात्मा की निरन्तर स्मृति के अभ्यास में ठीक रीति जुट सकता है। अब प्रश्न यह उठता है कि 'शुद्ध आहार' किसे कहते हैं? प्राचीन अध्यात्मवादियों ने आहार के तीन दोष माने हैं – जाति दोष, आश्रय दोष और निमित्त दोष

**1. जाति दोष:** जाति दोष से अभिप्राय यह है कि खाने के कुछ पदार्थ ऐसे होते हैं जिनकी सारी जाति ही

मन में दोष उत्पन्न करती है जैसे कि लहसुन, प्याज आदि। वे सारे पदार्थ ही तमोगुण के उत्पादक माने जाते हैं और योगाभ्यासी अथवा आध्यात्मिक पुरुषार्थी के लिए वर्ज्य माने जाते हैं।

**2. आश्रय दोष:** प्राचीन काल से भारत में यह मान्यता रही है कि जिसकी कमाई से खाना बना हो, यदि वह आदमी दुष्ट अथवा दुष्चरित्र हो तो भी मनुष्य के मन को अन्न का दोष लगता है। इसके अतिरिक्त, यदि भोजन बनाने वाला व्यक्ति नियम-संयम का पालन करने वाला न हो और अशुद्ध विचारों वाला हो, उसके हाथ से बना हुआ भोजन भी मन को दोष-युक्त बनाता है और इस प्रकार के दोष को 'आश्रय दोष' कहा जाता है।

**3. निमित्त दोष:** यदि भोजन में सफाई न हो अर्थात् उसमें बाल, कीड़ा, धूल, मक्खी अत्यादि पड़ जाए तो उसे 'निमित्त दोष' कहा गया है क्योंकि उनके निमित्त से शरीर के रोग होते हैं और वे रोग मनुष्य के मार्ग में बाधा डालते हैं, मस्तिष्क पर प्रभाव डालते हैं, मन का ध्यान अपनी ओर खिंचवाते हैं, इस प्रकार, दोष उत्पन्न करते हैं।

इन तीनों प्रकार के दोषों का वर्णन करते हुए इनसे बच के रहने के लिए कहा गया है। बहुत-से लोग प्राचीन काल में इस नियम का इतनी कट्टरता से पालन करते रहे हैं कि वे अपने हाथों से ही भोजन बनाते रहे ताकि उन्हें 'आश्रय दोष' न लगे। ऐसे लोगों को 'स्वयंपाकी' कहा गया है। इस विषय में रामानुजाचार्य और उनके आस्थावान शिष्यों का नाम विशेष उल्लेखनीय है। ऐसे ही वल्लभाचार्य सम्प्रदाय में भी बहुत-से लोग हैं जो इस नियम का पालन करते रहे हैं। आज भी ऐसे बहुत-से लोग हैं जो अन्न दोष की गंभीरता को समझते हैं और इसका कट्टरता से पालन भी करते हैं। पुराने साहित्य में तो ऐसे भी उल्लेख हैं जिनसे पता चलता है कि भूल-चूक से भी अन्न दोष से ग्रसित होने पर साधक लोग कठोर प्रायश्चित्त किया करते थे। इस सम्बन्ध में एक ऐतिहासिक घटना विशेष तौर पर प्रसिद्ध है जो कि इस प्रकार है –

इतिहासकार कहते हैं कि भारत पर आक्रमण करने से पहले सिकन्दर महान् अपने गुरु के पास आशीर्वाद लेने गया, तब उसने गुरु से पूछा, 'महाराज, जब मैं भारत से विजयी होकर लौटूँ तो आपके लिए क्या तोहफा ले आऊँ?'

गुरु ने उत्तर दिया, 'मुझे और तो कुछ नहीं चाहिए परन्तु यदि हो सके तो भारत के किसी विद्वान को ले आना।'

सिकन्दर बोला, 'महाराज, भारत के खजाने तो भरपूर हैं। वहाँ रत्न, हीरा, माणिक, मोती भी काफी मात्रा में हमारे हाथ लगेंगे। वहाँ खाद्य पदार्थ भी एक-से-एक बढ़कर रसीले और स्वादिष्ट होते हैं। क्या-क्या चीजें गिनाऊँ?'

गुरु ने कहा, 'परन्तु, भारत की सर्वोत्तम निधि तो वहाँ का आध्यात्मिक ज्ञान है। यदि उसके किसी ज्ञाता को तुम यहाँ आने के लिए तैयार कर सको तो तुम मेरा मन-चाहा नजराना मुझे दे सकोगे।'

सिकन्दर, 'जो आज्ञा, महाराज।'

इतिहास में उल्लेख है कि सिकन्दर जब अपने देश

को वापिस लौटा तो वह एक साधना-प्रिय विद्वान को वहाँ जाने के लिए तैयार कर पाया। सिकन्दर ऐसा शिष्य था कि इतनी बड़ी सेना की प्रशासनिक समस्याओं तथा युद्ध में विजय के उपरान्त प्राप्त होने वाली कीर्ति और अनेक निधियों के बावजूद गुरु के बताए हुए नजराने को नहीं भूला परन्तु, परन्तु....

### विद्वान का कड़ा प्रायश्चित्त

परन्तु बात यह है कि भारत का एक विद्वान, सिकन्दर के बहुत आग्रह, आश्वासन और आमन्त्रण पर उसके साथ यूनान चला तो गया परन्तु वहाँ किसी के हाथ का बना भोजन खा लेने के बाद उसे यह अपनी भूल बहुत सताने लगी। उसके मन में बहुत वेदनादायक पश्चात्ताप की अग्नि भड़क उठी कि यहाँ आकर अपने हाथ से बनाया, पवित्र भोजन करने की बजाय मैंने धन और विजय के लोभी तथा दूसरों का रक्त बहाने वाले इन लोगों के हाथ का बना भोजन क्यों कर लिया? इतिहास में बताया गया है कि उसके मन में यह अग्नि इतनी तीव्रता से धधक उठी कि उससे रहा नहीं गया और स्वयं को आग लगाकर जीवन का ही अन्त कर डाला। शायद उसने सोचा होगा कि जो अशुद्ध भोजन मेरे शरीर में एक बार चला गया है, अब उसको किसी भी तरह से निकाला नहीं जा सकता। यद्यपि उसका यह विचार एक प्रकार से सीमा का अतिक्रमण था तथापि हम इतिहास के इस पन्ने से, यह शिक्षा तो ले सकते हैं कि हमारे देश की संस्कृति में आहार की शुद्धि को कितना महत्व दिया जाता था। हम इस पर गर्व करने के भी अधिकारी हैं कि हमारे यहाँ ऐसे-ऐसे वीर हुए हैं जो जिह्वा के स्वाद को लेकर जीवहत्या को न केवल एक घृणित कार्य मानते थे बल्कि किसी द्वारा प्रशंसा एवं सत्कार मिलने पर या आग्रह एवं अनुरोध होने पर, उनके दबाव में आकर 'आश्रय दोष' वाला अन्न ले भी लेते तो उसके लिए हर प्रकार का प्रायश्चित्त करने को तैयार होते थे।

### पापमय जीवन को मौन स्वीकृति

हम कह आये हैं कि प्रायश्चित्त के रूप में अपने जीवन का ही अन्त कर देना – यह भूल का सुधार नहीं बल्कि एक और भूल करना है। हो सकता है कि यह भूल भी उसके आश्रय दोष वाले अन्न के ही प्रभाव का



परिणाम हो। परन्तु, इससे यह निष्कर्ष लेना उचित ही है कि इस ढाई इंच की जबान के स्वाद के लिए पाप कर लेना अथवा पापी के हाथ का बना हुआ भोजन कर लेना, एक प्रकार से उसके पापमय जीवन को मौन स्वीकृति दे देना है, जोकि एक पाप ही तो है।

### बुराई के प्रति मन का ढीलापन

जब हम यह जानते हैं कि अमुक व्यक्ति काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार द्वारा अनेकानेक आत्माओं के पतन के कार्य में लगा हुआ है तो उसके हाथ के बने भोजन को स्वीकार कर गोया हम उसकी गतिविधियों का समर्थन करते हैं। दूसरे शब्दों में, यों कहिए कि हम उसे उस पापमय जीवन-पद्धति को अपनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। हमारी यह कमजोरी, हमारे लिए भी खतरनाक है। जब एक बार हम एक बुराई के साथ मिलने के लिए स्वीकृति दे देते हैं तो फिर हमारे मन के सभी अनुशासन ढीले हो जाते हैं और इसका परिणाम शीघ्र ही यह होता है कि हम अपनी अच्छी जीवन-पद्धति के प्रति किसी से थोड़ी भी आलोचना सुनकर, किसी के द्वारा अपने मान और शान में थोड़ा भी अन्तर पड़ते देखकर, अमूल्य सिद्धांतों और नियमों को एक के बाद एक छोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। मान और शान को गँवाए जाने का भय हमारे मन को कचोटने लगता है। गोया हमारी बुद्धि यह मान लेती है कि यह जो नियम हमने अपनाया है, शायद यह ठीक नहीं है। हमारी इस प्रकार की शंकालु बुद्धि, हमारी सारी साधना को खत्म करने के निमित्त बनती है और बुराई के पक्ष को बलवान समझ कर एक नियमहीन, सिद्धांतहीन और अवसरवादी दल-बदलू की तरह आयाराम और गयाराम बन जाते हैं।

### दुष्टों का अन्न खाया, दुष्टों का पक्ष लिया

कहावत है 'जिसका अन्न खाइये, उसी का गुण गाइये।' हम जीवन में प्रायः यह देखते भी हैं कि मनुष्य यदि किसी से एक पान का पत्ता भी खा लेता है, चाय का एक प्याला भी पी लेता है, उसके प्रति वह थोड़ी-सी ही सही, कुछ कृतज्ञता अनुभव करता जरूर है। उसके प्रति वह पूर्णतः निष्पक्ष और निर्भीक अनुभव नहीं करता। यादगार शास्त्र महाभारत का उदाहरण हमारे सामने है। उसमें लिखा है कि भरे दरबार में द्रोपदी का चीर-हरण हो रहा

था और भीष्म पितामह तथा द्रोणाचार्य यह तमाशा देखते हुए ऐसे बैठे थे जैसे कि उनके बदन में लहू ही न हो अथवा वे काठ के बने हुए हों। उनका क्षात्र धर्म भला किस काम का हुआ? परन्तु प्रश्न उठता है कि उनकी बुद्धि पर यह पर्दा पड़ा क्यों? वे दुष्टों ही का पक्ष क्यों लेते रहे? इतने बड़े आचार्य होते हुए भी उनके मुँह को ताला क्यों लग गया? वे पथराई हुई-सी आँखों के द्वारा देख रहे हों, ऐसा उनके साथ क्यों हुआ? स्पष्ट है कि उन्होंने दुष्ट ही का अन्न खाया था और वे अब अपने को इसलिए बाध्य मानते थे कि वे उन दुष्टों का ही पक्ष लें, फिर चाहे वे अन्याय, अधर्म और अत्याचार ही पर क्यों न तुले हुए हों और अपने भाइयों को भी खूनी आँखों से देखते हों। महाभारत ग्रन्थ इस बात का साक्षी है कि जब युद्ध का शंखनाद बज चुका तब युधिष्ठिर; भीष्म और द्रोण से मिलने के लिए गए। उन दोनों ने जब कहा, 'धर्मपुत्र युधिष्ठिर, हमारी शुभकामनाएँ तुम्हारे साथ हैं। तुम्हारा पक्ष धर्म का पक्ष है इसलिए तुम्हारी विजय निश्चित ही है परन्तु हमारी मजबूरी यह है कि हम लड़ेंगे दुर्योधन की ओर से ही क्योंकि हम उसके दास हैं, कारण कि हमने उसका अन्न खाया है।...'

तो देख लीजिये, किसी दुष्ट का अन्न खाने वाला उस दुष्ट का भी कितना एहसानमन्द रहता है। यदि वह उसका पक्ष छोड़ देता है तो तुरन्त ही वह उसे 'नमकहराम' की उपाधि देता है। 'नमकहराम' क्यों? इसलिए कि नमक हमारे भोजन में अत्यंत अल्प मात्रा में होता है और बहुत सस्ता होता है। अतः जबकि चुटकी-भर नमक खाने वाले को भी 'नमकहराम' रूपी गाली सुननी पड़ती है तब अन्न खाने वाले का क्या हाल?

### तीन प्रकार का आश्रय दोष

'आश्रय दोष' भी तीन प्रकार का होता है। एक आश्रय दोष तो मनुष्य को तब लगता है जब वह किसी दुष्ट व्यक्ति की कमाई पर आश्रित रहता है। अच्छा भला होने पर भी उसके दिये टुकड़ों पर जीवन निर्वाह करता है। दूसरा आश्रय दोष तभी लगता है जब मनुष्य किसी द्वारा गलत रीति से धन स्वीकार कर लेता है। तीसरा वह दोष है जो किसी अपवित्र अथवा पतित व्यक्ति द्वारा बनाए भोजन को खाने से लगता है। इन सभी अन्न दोषों से बचना अपने योगाभ्यास के मार्ग से एक बड़ी बाधा को हटाना है। ■■■



## भारत के उपराष्ट्रपति महामहिम एम. वेकैया नायडू जी ने जारी किया ब्रह्मा कुमारी संस्था की पूर्व प्रमुख दादी जानकी का पोस्टल स्टैम्प

नई दिल्ली, 12 अप्रैल। नई दिल्ली में सरदार वल्लभ भाई पटेल मेमोरियल हाल में ब्रह्माकुमारी संस्था की पूर्व प्रमुख दादी जानकी की स्मृति में डाक टिकट जारी करते हुए उपराष्ट्रपति महामहिम एम. वेकैया नायडू ने कहा कि ब्रह्माकुमारी आध्यात्मिक आंदोलन की पथ प्रदर्शक और संस्था की पूर्व प्रमुख राजयोगिनी दादी जानकी जी की पावन स्मृति में विशेष डाक टिकट जारी करने का सुयोग पाकर बहुत प्रसन्नता का अनुभव कर रहा हूँ।

दादी जानकी, जिन्होंने पिछले वर्ष 104 वर्ष की आयु में हम सभी से विदाई ली, समकालीन अग्रणी आध्यात्मिक नेताओं में से एक थी। ब्रह्माकुमारीज के शांतिवन परिसर में, 2019 में श्रद्धेय दादी से मिलने तथा उनसे आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मुझे मिला। असाधारण आध्यात्मिक शिक्षिका की पहली पुण्यतिथि पर, श्रद्धांजलि के तौर पर, संचार मंत्रालय, भारत सरकार, यह डाक टिकट जारी कर रहा है। हमें दादी जी के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए जो ईश्वर के प्रति तथा मानवता की निस्वार्थ सेवा के प्रति समर्पित रहा। दुनिया को दादी जानकी जैसे ही उपचारक की जरूरत है, जो सभी धर्मों की हठधर्मिता और अनुष्ठानों से हटकर, 'भगवान एक है' इस बात पर विश्वास करती है। राजयोग पर केंद्रित उनका शिक्षण, उनकी दयालुता, सेवा, सादगी और करुणा के गुण वास्तव में सभी के लिए अनुकरणीय हैं। सभी को दादी जानकी के नक्शे कदम पर चलते हुए, सामाजिक बुराइयों जैसे, लैंगिक भेदभाव, जातिवाद और सांप्रदायिकता से लड़ना चाहिए एक बेहतर भारत बनाने के लिए जहां पर सभी को समान अवसर प्राप्त हों तथा सभी औरों के साथ सद्भावनापूर्ण जीएँ। जब भी मैं दादी जी से मिला, उनके मुस्कराते और शांतिपूर्ण चेहरे से मुझे शांति की महसूस होती। वह शांति और शांतचित्त का अवतार थी, जिन्होंने जो सिखाया



उसका अनुकरण स्वयं अपने जीवन में, अंत तक किया।

दुनिया भर में फैली हुई ब्रह्माकुमारी (संस्था) दादी जी के जीवन से संबंधित मूल्यों और सिद्धांतों का एक जीवंत उदाहरण है। ब्रह्माकुमारी की विशेषता यह है कि इस संस्था का नेतृत्व महिलाएं करती हैं, जो इस तथ्य को प्रदर्शित करता है कि आध्यात्मिक उपलब्धि लिंग भेद से परे है। यह विश्वव्यापी आंदोलन महिलाओं के सशक्तिकरण और स्वतंत्रता का एक अनुकरणीय विजेता रहा है।

बहनों और भाइयों, यह ध्यान देने योग्य बात है कि भारत में, हर क्षेत्र में, महिला नेताओं का समृद्ध इतिहास रहा है। वैदिक काल में हमारे पास गार्गी और मैयत्री जैसी प्रसिद्ध दार्शनिक थीं जिनकी प्रसिद्धि, आध्यात्मिक मुद्दों पर महारत के कारण दूर-दूर तक थी। हमें याद रहे कि प्राचीन भारत में 'दिव्य स्त्री' की 'शक्ति' के रूप में पूजा की जाती थी। सदियों से हमारे मूल्यों में आई गिरावट, समाज में महिलाओं के प्रति व्यापक भेदभाव द्वारा परिलक्षित होती है। इसे बदलने की जरूरत है। समाज के हर क्षेत्र की गतिविधि में, महिलाओं के समान अधिकारों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए, न केवल शब्दों में बल्कि आत्मिक भाव में भी।



सरकार ने बालिकाओं को समान अवसर सुनिश्चित करने के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जिसमें 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' और 'सुकन्या समृद्धि योजना' आदि शामिल हैं।

प्रिय मित्रो, आध्यात्मिकता, सभी धर्मों का आधार है जो उन्हें एक सूत्र में बांधता है। लोगों को यह समझने की जरूरत है कि केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही दुनिया में सच्ची शांति, एकता और सद्भाव सुनिश्चित कर सकता है। स्थाई विश्वशांति का मार्ग भारतीय सभ्यता गत मूल्य 'साझा और देखभाल (शेयर एंड केयर)' और वसुधैव कुटुंबकम् है।

खुद से अपने अस्तित्व के बारे में सवाल करना, जीवन का व्यापक उद्देश्य ढूंढना और उनका समाधान खोजना, यही अध्यात्म है। अध्यात्म, खुद से ही खुद का विमर्श है। यह जीवन और समाज के प्रति स्थिर सामंजस्य विकसित करता है। व्यक्ति अपने सामाजिक और प्राकृतिक परिवेश के प्रति एकात्म सौहार्द विकसित कर पाता है। ऐसी स्थिति में हम समाज के लिए सकारात्मक योगदान कर सकते हैं।

आज के व्यक्तिवादी जीवन में अपने सामाजिक या प्राकृतिक परिवेश से हमारी संघर्ष की संभावना बढ़ गई है। मुझे संतोष है कि ब्रह्माकुमारी जैसी संस्था समाज की इस विकृति को दूर कर रही है। सहज और सरल भाषा में हमारी आशंकाओं का समाधान कर रही है। अपने सवालों का समाधान निकालने में हमारी मदद कर रही है, जिससे हमारे जीवन में रचनात्मक शांति और समाज में सौहार्द पैदा होता है। ब्रह्माकुमारी ने सचमुच गार्गी और मैयत्री की परंपरा को पुनर्जीवित किया है। आपने आहत मानवता को अध्यात्म का प्रकाशित मार्ग दिखाया है, इसके लिए समाज आपका आभारी रहेगा।

दादी जानकी की फिलोसॉफी 'दूसरों की सेवा में ही आनंद लेना' यह सुखी और संतुष्ट जीवन का मंत्र है। वर्तमान समय समस्त विश्व कोविड-19 के महामारी के चलते एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट और कई समस्याओं के दौर से गुजर रहा है। मैं सभी से अनुरोध करता हूँ कि जीवन के इस महत्वपूर्ण चरण के दौरान सभी जरूरतमंदों की मदद करें और उनकी पीड़ा को दूर करें।

राजयोगिनी दादी जानकी जी द्वारा मानवता की

निस्वार्थ सेवा की पावन स्मृति में, भारत सरकार के संचार मंत्रालय द्वारा मुद्रित 5 रूपये के डाक टिकट को जारी करते हुए मुझे विशेष प्रसन्नता और संतोष हो रहा है। धन्यवाद, जयहिंद।

भारत के आई.टी. मंत्री श्री रवि शंकर प्रसाद जी ने भी इस अवसर पर उद्बोधन दिया जो इस प्रकार है –

महामहिम उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू जी, श्रद्धामना आशा दीदी जी, पोस्टल विभाग के सचिव श्री बिशोई एवं अन्य पदाधिकारीगण, कार्तिकेयन एवं सभी गुणी देवियों और सज्जनो, यह कार्यक्रम पोस्टल विभाग के प्रयास से हो रहा है और महामहिम उपराष्ट्रपति जी ने कृपापूर्वक अनुमति दी है कि देश की एक महान साधिका दादी जानकी जी के सम्मान में पोस्टल स्टैप का आज डेडिकेशन हो रहा है, तो मैं विभाग के मंत्री के रूप में आप सभी का बड़ा स्वागत करता हूँ और बहुत ही अभिनंदन करता हूँ।

भारत की धरा संस्कृति की है, संस्कार की है, संतों की है, अध्यात्म की है। भारत को अगर अपने दृष्टिकोण से समझने की कोशिश करता हूँ तो तीन सिद्धांत मुझे हमेशा दिखाई पड़ते हैं। एक तो ऋग्वेद की एक ऋचा है, 'एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति।' सत्य एक है, विद्वान विभिन्न प्रकार से उसकी व्याख्या करते हैं। truth is one, wise men interpreted differently, you have own perception of truth, that I have my own, you follow your own path, I follow my own. You respect my path, I respect your. Because in the ultimate analysis your path and my path merges in the same destination. Where in lies the ultimate truth. Permanent, eternal, indivisible, undividable (आप अपने रास्ते चलें और मैं अपने रास्ते चलता हूँ। आप मेरे मार्ग का आदर करें और मैं आपके मार्ग का आदर करता हूँ। अंततः आपका और मेरा रास्ता एक ही मंजिल पर आकर मिलते हैं जिसमें सम्पूर्ण, स्थाई, शाश्वत, अविभाजित सत्य है)। यही है भारत की सोच। दूसरा है 'वसुधैव कुटुंबकम्।' पूरा विश्व अपना है, हमें किसी को आगे-पीछे नहीं देखना है, पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखना है। तीसरा है 'सर्वे भवतु सुखिनः सर्वे संतु

निरामयाः।' पूरा विश्व एक परिवार है, सभी संतुष्ट रहें, सभी खुश रहें। ये संस्कार तो हैं लेकिन इनको जमीन पर उतारने के लिए ईश्वर एक माध्यम बनाता है। दादी जानकी, मैं बहुत विनम्रता से कहूंगा कि वे ईश्वर के द्वारा वही माध्यम थी, जो पूरी दुनिया में भारत के शाश्वत सिद्धांत का विस्तार से परिचय दे रही थी। अभी श्रद्धामना आशा दीदी जी उनके बारे में बता रही थी, मैं पढ़ रहा था। सन् 1974 में इंग्लैंड जाना, अंग्रेजी में बहुत प्रवीण नहीं होना, फिर भी अंदर से लगन है कि हमें इस राजयोग के महान आंदोलन को व्यक्ति निर्माण में ले जाना है, जहां व्यक्ति में नकारात्मकता नहीं हो, जहां व्यक्ति अंदर से आत्मविश्वास से कुछ बड़ा सोचे और अपना ही नहीं, दूसरे का सोचे, सद्भाव बढ़ाए। यही तो उनके पूरे चिंतन का सार था और सरलता से उन्होंने भारत के दर्शन को जिस तरह से पूरी दुनिया में रखा, बहुत बड़ी बात है।

आशा दीदी, मैं आपको बताऊँ, दादी जी से जो मेरा पहला साक्षात्कार हुआ था, हम लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आंदोलन के सिपाही थे। जब 1979 में उनका देहावसान हुआ था तो प्रार्थना सभा में दादी जी भी आए थे और हम लोग उस समय स्टूडेंट थे, जे. पी. के साथ बहुत लंबा समय संघर्ष में रहे। महामहिम उपराष्ट्रपति जी हम से काफी वरिष्ठ हैं, उस संघर्ष में उनकी भी स्नेहिल सक्रियता रही। लेकिन उस समय दादी जी को पहली बार देखा था। उनकी आभा, उनकी सोच, उनकी प्रार्थना में जो तत्व था, उसने मुझे बहुत आकर्षित किया था।

आज मैं आपको दूसरी बात ये कहना चाहता हूँ, एक बार आपके संगठन ने मुझे एक कार्यक्रम में बुलाया था, माननीय वेंकैया जी, जो पूरे गुड़गांव में आई.टी. प्रोफेशनल्स हैं, इसका उन्होंने तीन दिन का एक बहुत बढ़िया कैंप कराया था – अध्यात्म की ओर – और मुझे कहा कि आप आई.टी. मंत्री हैं, आइए, आप इनको संबोधित करिए। आई.टी. के प्रोफेशनल्स को तो मैंने दुनिया भर में संबोधित किया है, कैलिफोर्निया से लेके, मुंबई से लेके लंदन तक, लेकिन ब्रह्माकुमारीज के परिवेश में आई.टी. प्रोफेशनल्स और देश का आई.टी. मंत्री उनको संबोधित करे, ये मेरे लिए भी अनुभव था।



आपके इन आयोजनों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है आशा जी! और मैं तो हमेशा कहता हूँ कि जेंडर जस्टिस की बात तो हम सभी करते हैं लेकिन जेंडर जस्टिस के आंदोलन को जमीन पर उतारने का काम जो आपके संगठन ने किया है, यह बहुत ही अभिनंदनीय है, इसके लिए मैं आपकी बहुत प्रशंसा करना चाहता हूँ।

आजकल की दुनिया के मटीरियलिस्टिक (भौतिकवादी) स्वभाव की हम बहुत चर्चा करते हैं कि वी हैव बीकम टू मच मटीरियलिस्टिक। स्वार्थ से व्यक्ति जकड़ा हुआ है। ऐसे में देश की बहनों को, देश की बेटियों को एक बड़े आध्यात्मिक परिदृश्य का परिचय देते हुए, अपने जीवन को त्याग कर इस आंदोलन में लग जाओ। मैं माउंट आबू गया हूँ, 25, 30 हजार व्यक्ति किस प्रकार वहां सद्भाव से मिलते हैं, रहते हैं, यह बहुत ही सुखद अनुभव है! आपका यह आंदोलन बहुत ही सफल हुआ है और दादी जी को इसके लिए हम सभी हृदय से प्रणाम करते हैं। शायद सेंचुरी ईश्वर अपने ऐसे ही शिष्यों को देता है। उन्होंने 104 वर्ष तक सार्थक जीवन जीया।

आज पोस्टल विभाग ने उनके नाम पर जो यह टिकट निकाला है, तो यह पोस्टल विभाग उनका सम्मान नहीं कर रहा है, हमारा पोस्टल विभाग सम्मानित हो रहा है। हमारे विभाग की यह परंपरा रही है कि ऐसे देश के योग्य मनीषियों के सम्मान में टिकट निकालते हैं। आज माननीय उपराष्ट्रपति जी आपको बताते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है, ये कोरोना फिर से अपने आवेग को दिखा रहा है, इनमें से पूरे कोरोना काल में हमारे पोस्टल विभाग ने जो काम किया है, देश को जोड़ने में, मैं कभी-कभी थोड़ा-सा हंसते हुए कहता हूँ, 'कोरोना में सड़क बंद, हवाई जहाज बंद, रेल बंद लेकिन देश को एक करने का काम जो मेरे सभी विभाग वालों ने किया, चाहे वह आई.टी. हो या मोबाइल हो या कम्युनिकेशन हो या इंटरनेट हो या हमारा पोस्टल विभाग हो। पोस्टल विभाग ने देश के गांव-गांव में डाकिया के माध्यम से आधार इनेबल पेमेंट पहुंचाया, लगभग 12000 करोड़ रुपए पहुंचाए, बीज पहुंचाए, दवा पहुंचाई और हमारे पोस्टल विभाग के लगभग 168 लोग कोरोना में शहीद हुए, काम करते हुए।

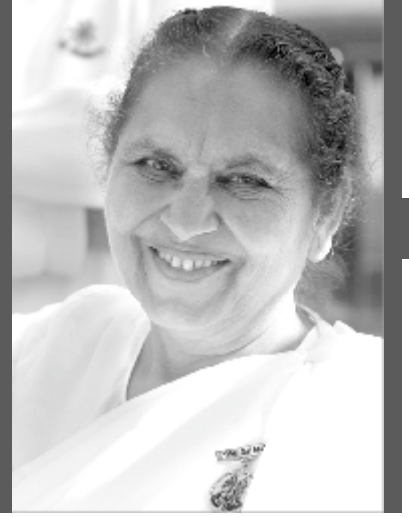
तो मुझे लगा कि आज का अवसर था, हमारे पोस्टल विभाग के लोग बड़े ही लो प्रोफाइल रहते हैं, मैं हमेशा ही कहता हूँ, जरा तुम लोग हाई प्रोफाइल बनो, देश के लिए बड़ा काम कर रहे हो। इसलिये माननीय उपराष्ट्रपति जी, आज के इस अवसर पर मुझे लगा कि मैं इनके अच्छे गुणों को भी बताऊँ। एक फैसला माननीय उपराष्ट्रपति जी मैंने और किया है। अगले वर्ष हमारे देश की स्वतंत्रता को 75 वर्ष पूरे होंगे। तो मैंने विभाग को निर्देश दिया है, भारत को आजाद करने में बहुत से जनसंग हीरोज ने काम किया है, जिनकी चर्चा नहीं होती है। बहुत से ऐसे संत, संन्यासी जिन्होंने अपने तरीके से देश को जगाने की कोशिश की। हर बदलाव राजनीति के माध्यम से नहीं होता है। देश तभी आगे बढ़ता है जब देश की सामाजिक शक्ति, देश की राजनीतिक शक्ति, देश की सांस्कृतिक शक्ति और देश की आध्यात्मिक शक्ति – सब मिलकर काम करती हैं। तो मैंने अपने विभाग को निर्देश दिया है कि जब भारत की आजादी के 75 वर्ष जब अगले साल पूरे होंगे, तो आप अपने वास्तु नेटवर्क के माध्यम से ऐसी छुपी हुई प्रतिभाओं को खोजें, उनका सम्मान करें, उन पर एक सिरीज ऑफ टिकट निकालें, उन पर बच्चों के बीच में कुछ एस्से कॉम्पिटिशन (निबंध प्रतियोगिता) कराएं ताकि 75 वर्ष के बाद जो नई पीढ़ी आए, उसको मालूम हो कि हम जहाँ जिस जमीन पर खड़े हैं, उस जमीन को मजबूत बनाने में बहुत लोगों ने काम किया है।

आज के दिन मैं पुनः दादी जानकी जी को बहुत प्रणाम करता हूँ और मेरी बहुत शुभकामना है आपके पूरे आंदोलन को। ब्रह्माकुमारीज इस देश के लिये, भारत के लिए और भारत के संस्कृति-संस्कार को दुनिया के सामने बहुत ही प्रभावी रूप से प्रस्तुत कर रहा है। आपका यह आंदोलन सफल हो, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं, धन्यवाद।

इस मौके पर पूर्व सीबीआई निदेशक भ्राता डी. आर. कार्तिकेयन, ब्रह्माकुमार बृज मोहन भाई, ब्रह्माकुमारी बहन आशा, ब्रह्माकुमारी बहन शिवानी, भ्राता मृत्युंजय तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। विश्व भर में फैले ब्रह्माकुमारी समुदाय के सदस्यों ने इस अवसर को चर्चुअली देखा। ■■■

# मम्मा के व्यक्तित्व में दिव्यता थी

■■■■ ब्रह्माकुमारी सुदेश बहन, जर्मनी



**ज**गदम्बा माँ (मम्मा) के साथ बिताए पलों की कुछ स्मृतियाँ आपसे साझा कर रही हूँ। मुझे अपने बचपन के दिन याद आ रहे हैं। मम्मा यज्ञ की जगदम्बा माँ थी, सभी उन्हें मम्मा कहते थे परन्तु मैं जब मम्मा कह रही हूँ तो तीन प्रकार की स्मृतियों के साथ मम्मा ओ मम्मा कह कर याद कर रही हूँ। मम्मा के व्यक्तित्व में दिव्यता थी। उस दिव्यता में सभ्यता थी, सभ्यता में स्नेह समाया हुआ था और स्नेह में गम्भीरता थी। गम्भीरता में हर एक आत्मा के लिये रूहानी प्यार, मधुर मुस्कान और उनके चरित्र का निर्माण करने की भावना समाई हुई थी।

## मम्मा बनी मुख्य ट्रस्टी

मम्मा (18 वर्ष की छोटी कुमारी) की दिव्यता अर्थात् उनकी क्लीयर बुद्धि की विशेषता पर शिवबाबा ने इतना विश्वास किया कि जब ब्रह्मा बाबा ने अपना सब कुछ ईश्वरीय सेवा में समर्पण किया और ट्रस्ट बनाया तो मम्मा मुख्य ट्रस्टी के रूप में रही। आध्यात्मिकता के बल से मम्मा यज्ञ की निमित्त सम्भालने वाली माँ बन गई। परन्तु, ट्रस्टी होते हुए भी, मम्मा के ऊपर यज्ञ को सम्भालने का बोझ है, ऐसा कभी महसूस नहीं हुआ। मम्मा को सरस्वती (बुद्धिमता की देवी) कहते हैं। जब मम्मा की मुरली चलती थी अथवा बाबा की मुरली का मम्मा विश्लेषण करती थी तो ऐसे लगता था जैसे कि सागर में डुबकी लगाकर और हीरे चुन कर हमारे सामने रख दिये। मम्मा की मुरलियों का सार ऐसे लगता है जैसे मम्मा ने हमारे लिये हीरों का हार तैयार कर दिया और बहुत स्नेह से हमारा श्रंगार किया।

## माँ की तरह सिखाई गंभीरता

चलते, फिरते, उठते, बैठते मम्मा के मुख से रतन निकलते थे। उनका स्वरूप बड़ा शांत और मुस्कराहट

बहुत दिव्य थी। जोर से मम्मा ने कभी नहीं हँसा, हँसते समय बिल्कुल थोड़ा-सा मुख खुलता था। कभी-कभी किसी कार्यक्रम में ऐसा भी हुआ कि हम सभी कुमारियाँ खिलखिला कर हँसी परन्तु मम्मा केवल मुस्कराई, हमारी तरह ठहाका नहीं मारा। वे थी तो हमारी तरह कुमारी ही, आयु में थोड़ी बड़ी थी परन्तु माँ की तरह हमको गंभीरता बहुत अच्छी तरह सिखाई।

## सत्यता को निर्भयता से सिद्ध करती थी

मम्मा शक्तिस्वरूपा थी, मम्मा में भय बिल्कुल नहीं था, सत्यता को निर्भयता से सिद्ध करती थी। जिस समय यज्ञ की स्थापना हुई, उस समय अनेक प्रकार की चुनौतियाँ भी आईं तो मम्मा का ज्ञान देने और बात करने का तरीका भी शक्तिशाली होता था। कोई थोड़ा विरोध भी करते थे, क्रोध से अपमानजनक शब्द भी बोल देते थे, हमको लगता था कि इनको थोड़ा जवाब देना चाहिये, जो ये बिना सभ्यता के बात कर रहे हैं परन्तु मम्मा की धारणा ऐसी थी जैसे ज्ञान की शीतल गंगा बह रही है, उसमें कोई उछल वाली लहर नहीं है। किसी ने कुछ बोल भी दिया तो ऐसे लगता था जैसे कड़वे वचन नहीं बल्कि फूल गंगा में पड़े हैं जो कि बहते हुए दूर चले गए हैं, मम्मा ने उनको अपने पास सम्भाल कर नहीं रखा।

## स्वमान की धारणा में दृढ़

एक बैंक का कैशियर भाई क्लास में आता था, उसकी युगल बहुत तेज स्वभाव वाली थी। एक बार जब मम्मा मुरली चला रही थी (क्लास करा रही थी) तब वो माता आई। उसने बहुत अपमानजनक बातें बोली, मम्मा

ने शान्ति से सुनी और ज्ञान की जो क्लास करा रही थी, वो कराती रही। वो ज्ञान-धन की देवी थी, कमल के समान न्यारी थी। जैसे कमल का फूल कीचड़ में होते हुए भी न्यारा होता है वैसे ही न्यारी होकर सुनती रही, कोई विरोध नहीं किया, चेहरा शांत रहा, तिरस्कार भी नहीं किया। चूंकि मम्मा ने बहुत स्नेह और शान्ति से सुना, क्रोध नहीं किया तो वो माता भी शान्ति से वापिस चली गई। तब मुझे ऐसे लगा कि गंगा में कोई कीचड़ भी डाल देता है और कोई फूल भी डाल देता है, दोनों ही बहकर दूर चले जाते हैं, गंगा किसी को भी पकड़ कर नहीं रखती। इसी प्रकार मम्मा ना प्रशंसा से खुश होती थी, ना किसी विरोध से असंतुष्ट अथवा रुष्ट होती थी। मान-अपमान, निंदा-स्तुति, लाभ-हानि, जय-पराजय आदि सब स्थितियों में मम्मा मान स्वमान की धारणा में दृढ़ थी। मम्मा में कमल-मन, कमल-नयन, कमल-मुख, कमल-चरण वाली लक्ष्मी का स्वरूप देखा। भक्ति मार्ग में जो यादगार चित्र है उसमें लक्ष्मीजी के हाथ में कोई हथियार नहीं है, उनका वरदानी स्वरूप है, चारों ही हाथ इस प्रकार से हैं कि उनका सबकुछ जन-सेवा में समर्पित है।

### मम्मा मेरी रूहानी माँ

हम बच्चों को मम्मा जो सिखलाती थी, बहुत प्रेम से सिखलाती थी। मेरा आध्यात्मिक जन्म मम्मा से ही हुआ है इसीलिये मम्मा मेरी रूहानी माँ हैं। उन दिनों जब मम्मा दिल्ली में आई थी तो एक पुस्तक 'भगवान की सच्ची गीता' छपने से पहले मम्मा को देखनी थी। जगदीश भाई ने कहा था कि छपने से पहले मम्मा चेक करे। वो बुक हिन्दी में थी, मैं मम्मा को पढ़कर सुनाती थी इसके लिये कॉलेज से सीधी सेन्टर जाती थी। मम्मा बहुत ध्यान से सुनती थी, कोई करेक्शन होती थी तो कहती थी, एक सेकेण्ड ठहरो, फिर नोट कराती थी। बहुत अच्छी-अच्छी पाइन्ट्स होती थी उस पुस्तक में, मम्मा उसकी बहुत गहराई में जाती थी, ऐसे मम्मा से बहुत नजदीकी सम्बन्ध हुआ।

### उमंग-उत्साह दिलाकर ज्ञान बोलना सिखाया

एक बार मम्मा ने मुझे कहा, आप एक स्थान पर क्लास करा कर आओ। मैंने कहा, मम्मा, मैंने तो कभी

क्लास करायी नहीं है। मम्मा ने कहा, तुम सच्ची गीता पढ़कर के मुझे सुनाती हो, अच्छी लगती है? मैंने कहा, मम्मा, बहुत अच्छी लगती है, समझ में आती है। विशेष करके तो मुझे तब अच्छा लगता है, बड़ा फायदा होता है जब उस पर आप अपने गहन विचार सुनाती हो। तो मम्मा ने मुस्कराते हुए कहा, जो चीज तुमको अच्छी लगती है, समझ में भी आती है, उससे जीवन में फायदा भी होता है तो वो अनुभव सुनाने में क्या मुश्किल है? मैं कुछ बोल नहीं सकी तो मम्मा ने बहुत उत्साहित करके मुझे उस क्लास में भेजा। मैं गई, जो कुछ मुझे अच्छा लगा था, वो सुनाया। जैसे माँ बोलना सिखाती है, इस प्रकार उमंग-उत्साह दिलाकर मम्मा ने हमको बोलना सिखाया।

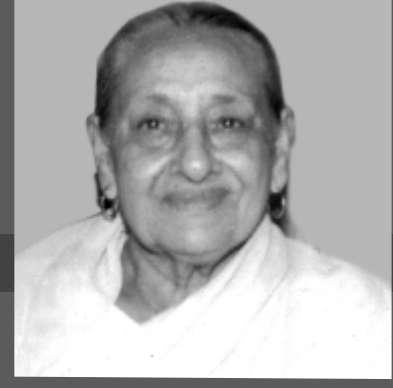
### भारत की प्रथम समर्पित कुमारी होने का गौरव

मम्मा ने एक बार हम कुमारियों का संगठन किया था। उसमें पूछा था, काली पर कौन समर्पण होगा? मेरे को बहुत उमंग आ गया, मैं उठ कर खड़ी हुई, मम्मा के पास गई और मम्मा का हाथ पकड़ लिया। मम्मा ने अपनी गोद में मुझे समा लिया और मुझे लगा कि शरीर से मैं न्यारी हो गई हूँ। मुझे ना अपने शरीर का भान था, ना मम्मा के शरीर का भान था। मैंने समझा, यही मेरा नया जन्म है। तब मम्मा से वरदान मिला, जिस मरने से जग डरे मेरे मन आनन्द, मरने ही ते पाइये पूर्ण परमानन्द। इस प्रकार नया जीवन मम्मा से मिला और फिर सेन्टर पर भी भेजा तो हमारे पिता जी को मम्मा ने ही कहा कि स्वदेश (सुदेश) सेन्टर जायेगी। हमारी मासी ने राजयोग सेन्टर खोला हुआ था, उनकी तबीयत ठीक नहीं थी तो मम्मा ने हमारे पिता जी से मेरे सेन्टर जाने की आज्ञा ली। अगली बार मम्मा जब दिल्ली में आई (1958) तो हमारे पिता जी ने मुझे विधिवत् यज्ञ में समर्पित कर भारत की प्रथम समर्पित कुमारी होने का गौरव दिलाया। इस प्रकार मम्मा के सानिध्य में बीते दिनों की यादें मुझे शक्ति भी देती हैं, उत्साह-उमंग भी दिलाती हैं, निर्भय भी बनाती हैं और ज्ञान-रत्नों से खेलना भी सिखाती हैं। ■■■



# मां जगदंबा की अलौकिक दृष्टि से मन हुआ भावविभोर

■■■ ब्रह्माकुमारी वीरबाला, लखनऊ



**जी**वन एक पुस्तक है। समय बीतता जाता है और पन्ने भरते जाते हैं। इन पन्नों में भी कुछ इतनी खूबसूरती से लिखे गए होते हैं जिन्हें याद कर-कर के मन खुश होता रहता है। साकार ब्रह्मा बाबा के तन में अवतरित हुए निराकार परमपिता परमात्मा के अलौकिक रूप का दिव्य अनुभव, मां जगदंबा तथा आदिरत्न बहनों के साथ की स्मृतियां ऐसी सुखदाई हैं जिन्हें याद करके मन गद्गद होता रहता है।

## मम्मा से पहली मुलाकात

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय हमें जापान से आई एक पुस्तक से मिला था जिसमें दादी प्रकाशमणि और दादी रतनमोहिनी के भाषण थे। इन भाषणों को पढ़ने के बाद माउंट आबू के पते पर बाबा से पत्र-व्यवहार करके लखनऊ का पता मालूम किया और हमने सेवाकेंद्र पर जाना प्रारंभ कर दिया। मेरे युगल राजेश्वर जी सन् 1955 में ही लखनऊ पार्टी के साथ बापदादा से मिलने माउंट आबू गए थे। मेरे साथ छोटा बच्चा था इसलिए निमित्त बहनों ने मुझे रोक दिया था, फिर एक साल बाद मैं मधुबन गई थी। पांडव भवन पहुंच कर पहले बाबा से मिले, उनकी गोद ली और टोली से मुख मीठा किया। बाबा के कमरे से उठकर हम क्लास-रूम में गए जहां मम्मा संदली पर बैठी थी। ग्रामोफोन पर रिकॉर्ड बज रहा था। पहली ही मुलाकात में मम्मा से दृष्टि लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। शक्ति स्वरूपा मां जगदंबा के नयनों से दिव्य दृष्टि पाकर आत्मा भावविभोर हो गई। मन खुशी से झूमने लगा।

मम्मा बहुत शांत, शीतल और सरल स्वभाव की थी। मम्मा बहुत कम बोलती थी। उनके मुख से निकला एक-एक शब्द उपयोगी और कल्याणकारी होता था। उनके हृदय में मातृस्नेह कूट-कूट कर भरा था। यही कारण था कि उनसे ज्यादा उम्र के लोग भी उनमें मां की छवि देखते थे। मैंने देखा कि मम्मा की अलौकिक मां भी मम्मा को मां कहकर बुलाती थी।

## मम्मा की कचहरी

शाम के समय मम्मा की कचहरी होती थी जहां बच्चे अपनी छोटी-छोटी गलतियों और कमजोरियों का वर्णन करते थे तथा मम्मा उनका समुचित समाधान करती थी। मेरी भी इच्छा थी एक प्रश्न का उत्तर जानने की, मम्मा ने शायद मेरे मन की बात जान ली थी इसलिए पूछा, क्या तुम कुछ पूछना चाहती हो, पूछो?

मैंने कहा, मम्मा, ज्ञान-योग-धारणा-सेवा की सब बातें अच्छी तरह समझ में आ गई हैं, मैं उनका पालन भी करती हूँ लेकिन ड्रामा केवल 5000 वर्ष का है, उसमें भी 2500 वर्ष दैवी स्वराज्य है बाकी 2500 वर्ष का समय इतिहास से मेल नहीं खाता। बीए तक इतिहास मेरा विषय रहा था इसलिए उसकी जानकारी दिमाग से निकल नहीं पा रही है। मम्मा ने सहज भाव से कहा, यह कोई ऐसा प्रश्न नहीं है जो हमारे पुरुषार्थ में बाधक बने। बहुत-से छोटे-छोटे प्रश्न पुरुषार्थ करते-करते स्वयं ही हल हो जाते हैं। सच में वह प्रश्न चलते-चलते स्वयं ही हल हो गया। प्रत्येक आत्मा में ज्ञान है। परमात्मा युक्ति बताते हैं। मन में ज्ञान का मनन-मंथन करके हम स्वयं ही अपने प्रश्नों का अनुभव सहित उत्तर ढूंढ लेते हैं।

### मम्मा ने सिखाई ईश्वरीय सेवा

मैंने एम.ए. तक शिक्षा अवश्य प्राप्त की थी परंतु जनसमूह के मध्य भाषण करने की मुझे बिल्कुल प्रैक्टिस नहीं थी। ज्ञान-योग तो अपना व्यक्तिगत पुरुषार्थ है। चित्रों का सहारा लेकर प्रदर्शनी समझाना भी कठिन नहीं लगता था। ब्रह्मा बाबा और मातेश्वरी में मानव में छिपी विशेषताओं को बाहर निकाल कर कार्य में लगाने की विशेष क्षमता थी। एक दिन मुझे मातेश्वरी के हाथ का गुरुमुखी भाषा में लिखा पत्र मिला। पत्र के साथ ही हिंदी रूपांतर था क्योंकि मैं गुरुमुखी नहीं जानती थी। मम्मा गुरुमुखी में पत्र लिखती थी, उनकी लेखनी बड़ी साफ और सुंदर थी। पत्र में लिखा था कि कानपुर के ब्रह्माकुमार संतराम भाई और उनकी युगल प्रकाश बहन अलीगढ़, खुर्जा, बुलंदशहर, मोदीनगर आदि शहरों में ईश्वरीय सेवार्थ जा रहे हैं, आपको भी उनके साथ कुछ दिनों के लिए सेवार्थ जाना है। मम्मा की आज्ञा थी इसलिए मैं उनके साथ चल पड़ी। पहले हम अलीगढ़ गए। प्रकाश बहन ने कहा, देखो, पहले तुम थोड़ी देर बोलना, फिर मैं बोलूंगी। लेकिन, मैं जनता के बीच मंच पर बैठकर नहीं बोल सकती, मैंने कहा। प्रकाश बहन कहने लगी, मम्मा ने तुम्हें मदद के लिए भेजा है, तुम जितना भी बोलो, जैसा भी बोलो पर बोलो जरूर, बाद में मैं संभाल लूंगी। अगले दिन कार्यक्रम में परमात्मा का परिचय देना था, मुझे तो चिंता लग गई, सारे पॉइंट्स इकट्ठे करके रात भर बैठ कर के रटे। भक्ति मार्ग की तरह बाबा से मदद की मित्रता करती रही। मेरे पास भाव भी थे, भाषा भी थी लेकिन यदि कुछ नहीं था तो वह था अपने ऊपर विश्वास।

अगले दिन मैंने सभा में बोला, ठीक बोल दिया। सब को अच्छा लगा। बाबा को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। मम्मा के प्रेरणा-पत्रों द्वारा कई बार बड़े-बड़े कार्यक्रमों में बोलने का अवसर मिला। धीरे-धीरे मेरी झिझक और देहअभिमान समाप्त होकर विश्वास जगने लगा।

### मातेश्वरी द्वारा सेवाकेंद्रों पर ज्ञान-वर्षा

मातेश्वरी के होते ईश्वरीय विश्व विद्यालय के जितने भी सेवाकेंद्र थे उन सब पर वे चक्र लगाती थी। थोड़े-थोड़े दिन ठहर कर ज्ञान-वर्षा करती थी जिससे ज्ञान की



हरियाली छा जाती थी। सेवाकेंद्र पर मम्मा के आने का निमंत्रण पाकर बहुत नए-नए लोग आते थे। मम्मा की मुरली और ज्ञानवार्ता को सुनने वालों पर गहरा प्रभाव पड़ता था और वे बाबा के बच्चे बन जाते थे। मम्मा की मुरली की विशेषता थी कि वे किसी एक विषय को उठाती और उसे सरल शब्दों में ऐसा स्पष्ट करती कि उस विषय का पूरा ज्ञान श्रोताओं की बुद्धि में बैठ जाता। वीणावादिनी मां सरस्वती की स्वर-तरंगें मन-मस्तिष्क में नवचेतना भर देती, फलस्वरूप, कई आत्माएं ईश्वरीय परिवार के सदस्य बन जाती। मुरली के अतिरिक्त जब भी किसी से बात करती तो मम्मा बड़े आदर और स्नेह से ज्ञान की ही बातें करती थी। मां कल्याणी थी, उनके मन में समस्त विश्व के लिए कल्याण भावना भरी हुई थी।

मम्मा को कभी साक्षात्कार नहीं हुआ परंतु वे स्वयं साक्षात्कार-मूर्त थी। देखने वाले उनके व्यक्तित्व में दिव्यता का अनुभव करते थे। प्रकृति के पांचों तत्वों द्वारा बनाया गया उनका तन सुंदर तो था ही लेकिन उस पर ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों और पवित्रता की दिव्य आभा ने उनको दर्शनीय बना दिया था। मंदिर में जब कोई सुंदर मूर्ति होती है तो मन कहता है कि उसे निरंतर देखते रहें। हमारे साथ तो चैतन्य मूर्ति थी। मैं अपने को भाग्यशाली समझती हूँ कि मधुबन के इलावा मम्मा जब लखनऊ सेवाकेंद्र पर आए तब भी उनके साथ रहने का मौका मिला। ■■■

# आध्यात्मिक शिक्षा की उपयोगिता



■■■ ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, बहल (हरियाणा)

कहा जाता है, शिक्षा से अंधियारा दूर होता है। विद्यार्थी, विद्या अध्ययन से पहले प्रतिदिन भगवान से प्रार्थना करता है, 'असतो मा सद्गमय', 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'। कई वर्षों तक कड़ी मेहनत करने के बाद वह ऊंची शिक्षा ग्रहण कर लेता है और समाज का सुशिक्षित व्यक्ति कहलाता है लेकिन क्या जीवन का अंधेरा मिटा? अध्ययन पूरा करने के बाद जब वह गृहस्थ में जाता है तो सिर्फ प्रार्थना के शब्द ही परिवर्तित होते हैं बाकी सब तो वही का वही होता है। अब वह मंदिर में जाकर कहने लगता है, 'विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा'। इसका अर्थ तो यही निकलता है कि इतना समय उसने जो शिक्षा पाई उससे उसके जीवन का अंधकार मिटा नहीं है। प्रकाश उसके जीवन में आया नहीं है। कभी-कभी वह ऐसे भजन भी गाता है कि 'नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु, पग-पग ठोकर खाऊं रे!' इससे यह सिद्ध होता है कि ये दोनों आंखें होते हुए भी उसे गलत और सही की पहचान नहीं हो रही है। शिक्षा से उजियारा जीवन में आया नहीं है। फिर यदि वह व्यापार के क्षेत्र में आता है तो फिर कुछ धर्माऊ (दान-पुण्य के लिए कुछ पैसा) निकालता है। वह समझता है कि धंधे में मेरे से कुछ पाप, झूठ, बेईमानी आदि होते हैं तो धर्माऊ निकालने से वे हल्के हो जाएंगे।

## मूल्यों को लेकर पिछड़ापन क्यों?

यहां प्रश्न यह उठता है कि कौन-सी शिक्षा है ऐसी, जो सचमुच जीवन का अंधकार मिटाए और वास्तविक रोशनी लाए? केवल धन कमाने की रोशनी नहीं लेकिन मुझे जीवन में क्या करना है? क्या नहीं करना है? कौन-से कर्म मेरे लिए व समाज के लिए सुखदाई हैं और किन कर्मों से समाज में व्यवस्था बिगड़ती है? ऐसी रोशनी, ऐसी समझ मिले, वह शिक्षा कौन-सी है? उसका स्रोत कहां है? वर्तमान शिक्षा के ढांचे में हमने मानव के लिए

उपयोगी सर्व सामग्री पाठ्यक्रम में समाहित की है लेकिन मूल्यों को लेकर आज भी शिक्षा में पिछड़ापन क्यों रह गया है? यह एक गंभीर और विचारणीय प्रश्न है!

## 'विद्या ददाति विनयम्' का रस चखा ही नहीं

एक बाइक सवार युवक को अति शीघ्र अपने गंतव्य तक पहुंचना था। रास्ते में चौराहे पर लाल बत्ती को पार करने लगा तो ट्रैफिक पुलिस ने रोका। गुस्से में आकर युवक ने तुरंत पुलिस को गोली मार दी कि मुझे जाने से क्यों रोका गया, मुझे बहुत जल्दी पहुंचना था। यह घटना एक स्कूल के कार्यक्रम में प्राचार्य ने सुनाई और कहा, बहन जी, पहले के जमाने में हत्या जैसा घृणित कर्म करने से पहले इंसान उसके बुरे परिणाम के बारे में हजार बार सोचता था कि यदि मैंने ऐसा किया तो फिर मेरा क्या होगा? मेरे परिवार का क्या होगा? मुझे जेल हो गई तो आदि-आदि। बहुत बार तो परिणाम सोच कर ही वह घृणित कर्म को कैसिल कर देता था परंतु आज कर्म करने के संकल्प और उसे कर डालने के बीच का फासला ही समाप्त होता जा रहा है। ऐसी घटनाओं से पता चलता है कि सुशिक्षित युवा भी बिना सोचे-समझे गलत कर्म कर बैठते हैं। आज तो धीरज, सहनशीलता या 'पहले सोचो फिर करो' ये नीति वचन पुस्तकों एवं दीवारों की शोभा मात्र बढ़ा रहे हैं। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि शिक्षित होकर हमारा अहम् कुछ और मुखर हो जाता है। मैं 'जब, जहां, जो चाहूँ, वह करूँ' यह प्रवृत्ति सिद्ध करती है कि हमने शिक्षा के फल 'विद्या ददाति विनयम्' का रस चखा ही नहीं है।

एक बार एक विद्यालय में मूल्यों पर विद्यार्थियों को कुछ सुनाने के बाद जब विद्यालय के संचालक महोदय से मिले तो उन्होंने विचार दिया कि आप की शिक्षाएं धार्मिक हैं इसलिए विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए सर्वथा अनुपयोगी

शेष भाग पृष्ठ 28 पर ...



# मिली ऊपर वाले की सही पहचान

■■■ ब्रह्माकुमार गोयत, फरीदाबाद



**मे**रा जन्म एक किसान परिवार में हरियाणा के हिसार जिले में हुआ। सन् 1975 में कस्टमर विभाग में इन्स्पेक्टर के रूप में मेरी नौकरी फरीदाबाद में लगी। सन् 1985 में मैंने एक बना-बनाया मकान खरीदा। जिस प्रोपर्टी डीलर (भाता जगदीश दुआ) ने मकान दिलवाया वह बहुत भला और नेक नियत वाला लगा। वह भाई अपनी सफेद कमीज की जेब पर एक बैज लगाये रखता था। एक दिन मैंने पूछा, 'भाई, आपने ये क्या लगा रखा है?' उसने बताया, 'ये शिवबाबा है।' मैंने कहा, 'ये शिवबाबा कौन है?' उसने कहा, 'ये परमात्मा हैं और राजस्थान में आबू पर्वत पर एक बूढ़े ब्राह्मण के शरीर में प्रवेश होकर नई दुनिया बनाने के लिए पढ़ाते हैं।' मैंने पूछा, 'कहाँ से आते हैं?' भाई ने कहा, 'शिवलोक से, ऊपर से आते हैं।' मुझे कुछ समझ में नहीं आया क्योंकि सुनने में तो यही आता था कि भगवान हर जगह है, पत्ते-पत्ते में भी है और वह भाई कह रहे थे कि ऊपर से आते हैं।

## कुम्भकरण ने पहली करवट ली

तभी मुझे हाली (हल चलाने वाला) की एक बात याद आई। हरियाणा में हल चलाते समय किसान बैलों को कहता है, 'लो भई ऊपर वाले का नाम।' किसी से कहावत सुनी थी, 'अनपढ़ जाट पढ़े बराबर-पढ़ा हुआ जाट खुदा बराबर।' मुझे ख्याल आया कि यह भाई भगवान के ऊपर से आने की ही तो बात कह रहा है। मेरे अन्दर के कुम्भकरण ने थोड़ी करवट बदली। फिर मैंने कहा, अच्छा, आबू में जहाँ शिवबाबा आते हैं मुझे वहाँ ले चलो। सन् 1987 में एक दिन उस भाई ने कहा, माउण्ट आबू में एक राजयोग शिविर लग रहा है, आप चलेंगे? मैंने झट हाँ कर दी और अपने महकमे के एक अन्य इन्स्पेक्टर

को भी साथ चलने के लिए राजी कर लिया।

तकरीबन 60-70 लोगों के ग्रुप में हम दो जने भी शामिल होकर चल पड़े और राजस्थान के सिरोंही जिले में आबू पहाड़ पर अगले दिन सुबह पाँच बजे पहुँच गये। थोड़ी-सी देर बाद विद्यालय के मुख्य परिसर पाण्डव भवन में पहुँच गये जहाँ बड़ी शान्ति और स्वच्छता का अहसास हुआ। पाण्डव भवन के नजदीक एक दूसरी सुन्दर इमारत है जिसका नाम है ज्ञान-विज्ञान भवन, हमें रहने का कमरा वहाँ दिया गया। एक बड़े हॉल (ओम शान्ति भवन) में दस बजे हमारा स्वागत सत्र हुआ। तकरीबन 300 लोग शिविर में पहुँचे थे। श्वेत वस्त्रधारिणी बड़ी-बड़ी दादियों से हमारा परिचय कराया गया। उन्होंने हमें आशीर्वाचन कहे। शिविर दोपहर तक चला। फिर भोलानाथ के भण्डारे में भोजन किया। कितना सात्विक भोजन! भोजन परोसने वाले भाई-बहनें इतने साफ-सुथरे विचारों वाले थे कि क्या वर्णन किया जाये! बाहर की दुनिया में या अपने घर पर भी कभी इतना निर्मल स्नेह और अपनापन हमने नहीं पाया। हमें लगा कि हम स्वर्ग में पहुँच गये हैं। रात्रि आठ बजे तक हम ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आध्यात्मिक शिक्षाओं से वाकिफ होते रहे और रात्रि भोजन के बाद दूर तक फैली सुन्दर नक्की लेक तक घूम कर सो गये।

## अन्दर सोये कुम्भकरण ने दूसरी करवट ली

अगली सुबह 3.30 बजे एक गीत की आवाज सुनी, 'अमृतवेला शुद्ध पवन है, मेरे लाडलो जागो।' गीत इतना सुन्दर और सुहावना था कि क्या कहा जाये! मन में ख्याल आया कि लाडले कहने वाला कौन है? हम हाथ-मुँह धोकर चाय-पानी लेने भण्डारे

में पहुँचे। रास्ते में देखा कि छोटे-छोटे सभागारों में श्वेत वस्त्र पहने, एक तरफ भाई और एक तरफ बहनें शान्त मुद्रा में बैठे हैं। ऐसा लगा जैसे हम प्राचीन ऋषि-मुनियों के आश्रम में पहुँच गये हैं। थोड़ी देर में एक और गीत सारे प्रांगण में गूँजने लगा –

‘शान्ति की एक चिड़िया आई, लेकर एक संदेश रे,  
क्यों फँसे प्राणी यहाँ, क्यों भूले अपना देश रे?’

इस जन्म में इस तरह के गीत हमने कभी नहीं सुने थे। वहाँ रहते हम बाहर की दुनिया, अखबार, टी.वी.आदि सब भूल गये। आत्मा, परमात्मा, तीन लोक और पुनर्जन्म के विषय में हमें बहुत गहराई से समझाया गया।

### फिर जैसे थे वैसे ही हो गए

शिविर की समाप्ति पर हम अपने-अपने स्थानों पर लौट आये। कुछ दिन तक तो उन बातों का असर रहा, फिर जैसे थे वैसे ही हो गये। दो वर्ष गुजर गये उस यात्रा को। जो भाई माउण्ट आबू ले गया था वह बीच-बीच में मिलता रहा और प्रेरित करता रहा कि गीत भाई, सात दिन का कोर्स कर लो। मैं उस भाई को यह कह कर टाल देता था कि भैया, जब आपके सबसे बड़े स्थान माउण्ट आबू ही हो आये तो अब और कोर्स क्या रह गया?

### माँग लिए सात दिन

कहते हैं, समय से पहले और भाग्य से ज्यादा किसी को कुछ नहीं मिलता। मुझे भी समय पर ही सब मिलना था। नौकरी तो मैं कर रहा था लेकिन मन में ऐसे-ऐसे ख्यालात आते थे कि नौकरी छोड़ कर हरिद्वार चला जाऊँ। कभी-कभी सोचता था कि गाँव में जाकर खेती कर लूँ। उन दिनों हमारे गाँवों में अंगूर की खेती कुछ लोग करने लगे थे। मैंने एक महीने की छुट्टी ले ली और सोचा कि गाँव में जाकर पता लगाऊँ कि अंगूर की खेती कैसी है। एक महीने की छुट्टी लेने की यह बात मैंने उस ब्र.कु.भाई को बता दी जो मुझे माउण्ट आबू ले गया था। उसने झट कहा, अच्छा,

एक महीने की छुट्टी ली है, अब सात दिन मुझे दे दीजिए, फिर गाँव जाकर अंगूर की खेती कर लीजिए। मुझसे ना नहीं कहा गया।

### चले कोर्स करने को

अगले दिन मैं कोर्स के लिये पहुँच गया। कोर्स कराने वाली बहन को मैं पहले से ही जानता था। उसने पहले मेरे मस्तक में तकरीबन एक मिनट तक देखा। मुझे ऐसा लगा मानो किसी ने मन में स्नेह और मिठास का रस घोल दिया है।

### कुम्भकरण जाग उठा

मैं निरन्तर दस दिनों तक सही समय पर कोर्स करने जाता रहा। दिन प्रतिदिन मुझे ज्ञान के गुह्य रहस्यों का पता लगता गया। दिल में खुशी अनुभव होने लगी। मुझे लगने लगा कि मैं एक अनोखी और अलौकिक शक्ति से बहुत जल्दी मिलने वाला हूँ। पहले तो यही सोचा था कि आठ-दस दिन का कोर्स पूरा करके फिर अंगूर की खेती का पता लगाऊँगा। कोर्स पूरा हुआ तो मैंने कहा, अच्छा बहन जी, अब जाऊँ अपने गाँव? बहन बोली, ‘भैया, यहाँ पड़ोस में सच्ची गीता पाठशाला है, हम दोनों (युगल सहित) वहाँ सुबह 6 बजे से 7.30 तक होते हैं, वहाँ शिवबाबा की मुरली सुनाई जाती है, आप आकर के देख लो।’ मैंने सोचा, चलो एक-दो दिन वहाँ भी जाकर देख लें।

### बाँह पकड़ कढ़ लीनो

शास्त्रों में कहीं लिखा है, बाँह पकड़ कढ़ लीनो यानि कि भगवान ने खुद बाँह पकड़ कर अपनी तरफ कर लिया, मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। मैं अगली सुबह छह बजे काला टैक सूट पहने हिचकता-हिचकता कमरे में जाकर बैठ गया जहाँ मध्यम लाल प्रकाश फैला हुआ था। एक भाई सन्दली पर बैठा था। फिर 6.30 बजे सफेद लाइट हो गयी और सन्दली पर बैठा हुआ भाई मुरली पढ़ने लगा – ‘ओम शान्ति, मीठे बच्चो, तुम शरीर नहीं, आत्मा हो। एक शरीर छोड़ दूसरा लेते रहते हो। अब अन्तिम जन्म है। मैं शिव

तुम्हें भक्ति का फल देने आया हूँ। मैं तुम्हारे लिये बहिश्त की सौगात लेकर आया हूँ।.....' मुरली क्या थी? बात मत पूछो। उसमें ईश्वरीय जादू भरा था। ठीक 7.30 बजे मुरली खत्म हुई और मैं अपने दुनियावी घर की तरफ चल पड़ा लेकिन पैर जमीन पर नहीं थे, जैसे उड़ता जा रहा था। शिव बाबा की पहली वाणी सुनते ही मुझे पक्का निश्चय हो गया कि ये किसी देहधारी मनुष्य, किसी बाबा, फकीर या मौलवी के बोल नहीं। यह तो खुद खुदा (भगवान) आ गया है, वो भी ऊपर से। बस, फैसला हुआ कि कल फिर से इसी गीता पाठशाला में आना है।

### अपने से मुलाकात

गीता पाठशाला में 5-6 दिन तक क्लास किया। एक शनिवार को क्लास के बाद बताया गया कि कल की क्लास बड़े सेन्टर एन.आई.टी. नम्बर वन सेक्टर में होगी। मैं वहाँ भी पहुँच गया और मुरली सुनी। क्लास खत्म होने के बाद सभी भाई-बहनों धीरे-धीरे उठकर जाने लगे परन्तु मैं तो वहीं रह गया। बाबा ने ऐसी दिव्यदृष्टि दी कि मैं प्रेम के गहरे सागर में डूब गया और मेरी मुलाकात मेरे से ही हो गयी। मैं इस देह से ऐसे अलग हो गया जैसे कोई मर जाता है। मस्तक में, भ्रुकुटि में मैंने खुद को बैठे हुए देखा। ऐसा लगा कि बस इसी अनुभव में खोया रहूँ। बड़ी बहन, जो क्लास करा रही थी, की नजर मेरे ऊपर पड़ी। वे बोली, क्या हुआ आपको? आप कहाँ से आये हैं? कुछ सेकण्ड तक तो मेरे से बोला नहीं गया। फिर कहा, बहन जी, सेक्टर-16 से आया हूँ। लगता है शिवबाबा मेरे ऊपर बहुत मेहरबान हो गये हैं, मैं आसमान में उड़ रहा हूँ।

### बाबा ने हिलाई खटिया

एक बार बाबा की मुरली में आया, मीठे बच्चे, अमृतवेला मेरे से करीब से मिलने की वेला है। अगर रात को बाबा को टाइम बता कर सो जायेंगे तो सुबह ठीक उसी समय बाबा जगाने आयेगा। मैंने सोचा, ट्रायल करके देखते हैं। रात को सोते समय मैंने कहा, बाबा,

मुझे तीन बजे सुबह जगा देना। अगली सुबह तीन बजे खटिया हिलने लगी। कोई चोर घर में घुसा आये या भूकम्प में खटिया हिले, वो बात और होती है। खटिया ऐसे हिल रही थी जैसे माँ, दूध पीते बच्चे का झूला झुलाती है। इतना मातृ-तुल्य स्नेह। मैं गद्गद् हो गया। उठकर घड़ी देखी तो पूरे तीन बजे थे। एक बात और – तीन बार तकिये से सिर उठाया और रखा, जगाने का इतना पक्का प्रोग्राम। मैं धन्य हो गया। भगवान ने मेरा इतना ख्याल किया। वाह! भगवान बाबा वाह! तेरी लीला अपरम्पार! मैंने कमरे से बाहर जाती हुई रूई जैसी सफेद आकृति भी आँखों से ओझल होती हुई देखी।

### परमधाम का दीदार

उस दिन हाथ-मुँह धोकर बहुत खुशी से योग में बैठ गया। वाह! जी वाह! भगवान हमारे पर इतना खुश कि बैठते ही मुझे शरीर से अलग कर लिया और मैं उड़ता गया, उड़ता गया। सूर्य, चाँद और सितारों से पार सूक्ष्म लोक में ब्रह्मा बाबा को नमस्कार करते हुए परमधाम पहुँच गया। रास्ते में मैंने सूरज-चाँद और सितारों की खुरदुरी सतह भी देखी। ऊपर पहुँच कर आत्माओं की दुनिया में ढेर सारी आत्माएँ देखी। फिर बाबा ने मुझे नीचे की दुनिया, जहाँ मैं रह रहा था, वह दिखाई। छोटा-सा भारत देश, उसमें फरीदाबाद शहर, शहर के एक घर के ऊपर बना हुआ चौबारा, उसमें एक चौकी पर मैं बैठा योग कर रहा था, आलथी-पालथी लगाये। मेरा शरीर यहाँ धरती पर था और मैं परमधाम में बाबा के घर में। थोड़ी देर के लिए जैसे मैं कर्मातीत स्टेज में पहुँच गया। मेरा मन किया कि बस यहाँ ही रह जाऊँ बाबा के रूहानी गाँव में लेकिन बाबा ने मुझे अनुभव कराया कि बच्चे अभी तो तुम्हें बहुत सेवा करनी है और झट मुझे स्थूल शरीर में वापस भेज दिया।

तब से, 30 वर्ष से अधिक समय हो चुका है युगल सहित ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। बच्चे पूर्ण सहयोगी हैं। नौकरी से इस्तिफा भी ज्ञान में आते ही दे दिया था और निरन्तर प्यारे बाबा की याद और सेवा में तत्पर हूँ। शुक्रिया मेरे प्राणनाथ शिवबाबा। शुक्रिया। ■■■



# सहज राजयोग - सर्वोच्च मनोवैज्ञानिक चिकित्सा पद्धति



■■■ ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लांट, शांतिवन

**श**ारीरिक बीमारी से भी मानसिक बीमारी कई गुना बढ़कर हानिकारक है क्योंकि एक मानसिक बीमारी, अनेक शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाती है। शरीर भले ही बीमार हो पर मन अगर सालिम है तो जीवन कठिन नहीं लगता। परन्तु, जब मन बीमार हो जाता है तब शरीर की दुरुस्ती, धन-दौलत, सुविधाएँ सब कुछ रहते हुए भी जीवन निष्फल हो जाता है।

## रोगों पर विजय पाकर भी सुखी क्यों नहीं?

प्लेग, कॉलरा (हैजा), मलेरिया, इनफ्लूएँजा (भारी नजला), रेबीस (रेबीज़), ट्यूबरकलोसिस (क्षयरोग) आदि महामारियों पर मनुष्य ने विजय हासिल कर दिखाई। इन रोगों पर विजय पाने के बाद मनुष्य को सदा सुखी रहना चाहिए था परन्तु विडम्बना है कि उसका दुख, रोगों के उस जमाने के लोगों से भी ज्यादा बढ़ा जा रहा है, क्यों?

## संस्कारों का संस्कार करने वाले हैं परमात्मा पिता

कारण स्पष्ट है। शारीरिक रोगों के कारण हैं कीटाणु, जो पंच महाभूतों से बने हैं। पंच महाभूतों से बनी दवाइयों से इन कीटाणुओं को नष्ट करके मनुष्य निरोगी बनने में सफल हुआ है। लेकिन, मानसिक अशांति के मूल कारण पांच विकार हैं जो पंच महाभूतों से बने हुए नहीं हैं। कोई भी दवाई, केवल मस्तिष्क को शांत कर सकती है लेकिन अशांति का उद्गम स्थान मस्तिष्क नहीं, मन है, जो आत्मा की एक शक्ति है। मन अशांत होता है काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि नकारात्मक वृत्तियों से, जो संस्कार के रूप में आत्मा के अंदर हैं। कोई भी दवाई, आसुरी संस्कारों को नष्ट नहीं कर सकती। डाक्टर भी जब रोगी की

काउन्सलिंग करता है, तो कुछ हद तक मन तक पहुंच कर, मनोवृत्ति में थोड़ा-सा सुधार ला सकता है पर गलत संस्कारों को भस्म नहीं कर सकता। आसुरी संस्कारों का नाश कोई भी मनुष्य मात्र नहीं कर सकता क्योंकि हर एक मनुष्य खुद भी संस्कारों से बंधा है। इनका नाश तो केवल वही कर सकता है जो विकारों के बंधन से मुक्त हो अर्थात् केवल परमपिता शिव परमात्मा ही हैं जो संस्कारों के बंधन से मनुष्य को छुड़ा सकते हैं।

मनोरोग चिकित्सा दो स्तरों में होती है। एक काउन्सलिंग (वार्तालाप या परामर्श) से मरीज़ को भ्रम से निकालकर वास्तविकता में ले आना। दूसरा, दवाई से बीमारी को नष्ट करना और जख्म भरना। भगवान शिवपिता की भी यही दो विधियाँ हैं। काउन्सलिंग अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान और दवा (मेडिकेशन) अर्थात् सहज राजयोग।

## काउन्सलिंग

केवल पांच अध्यायों के परामर्श से पिता परमात्मा मनुष्य को इस हद तक मनोविकारों से मुक्त कर देते हैं कि वह व्यक्ति देवत्व का पद प्राप्त कर लेता है।

**अध्याय एक :** सबसे पहले, एक दैत्याकार के भ्रम से हमें बाहर निकाल कर सत्यता की ओर ले जाते हुए शिवपिता कहते हैं, मीठे बच्चे, आप यह विनाशी शरीर नहीं बल्कि अविनाशी ज्योतिर्बिंदु आत्मा हो। आप आत्मा रथी हो और शरीर आपका रथ है। न किसी ऋषि-मुनि, न किसी साधु-संत, न किसी वैज्ञानिक या न ही किसी दार्शनिक ने आज तक यह कहा है कि मैं आत्मा हूँ और मेरा यह शरीर है। आत्मा और शरीर दोनों अलग-अलग हैं, यह उनको पता तो था लेकिन उन्होंने

मेरी आत्मा कहकर, खुद को शरीर समझ लिया। मैं ही आत्मा हूँ, इस राज़ को वे जान नहीं पाए। मैं आत्मा हूँ और मेरा यह शरीर है, शिवपिता के ये महावाक्य सारे कल्प के सबसे बड़े क्रांतिकारी उच्चारण हैं। वर्तमान में इसी समझ के आधार पर, अगले आधे कल्प (सतयुग और त्रेतायुग) में देवताएँ देह अभिमान से मुक्त रहते हैं।

मैं आत्मा हूँ, यह महसूस होते ही जिज्ञासु यह अनुभव करता है कि कड़े से कड़ी जंजीर से छुटकारा पाकर मैं आसमान में उड़ रहा हूँ। मैं शरीर हूँ, इस गलत समझ से मनुष्य हजारों दुखों का शिकार बन गया था। मैं लूला हूँ, लंगड़ा हूँ, अंधा हूँ, काला हूँ, पतला हूँ, मोटा हूँ, बौना हूँ, मेरा पेट बड़ा है, मेरे सर पर बाल नहीं हैं, मैं रोगी हूँ, मुझे बी.पी., शुगर है, मैं मरने वाला हूँ, ऐसे अनेक प्रकार के असत्य, जो मनोरोग के कारण बने थे, उनसे मुक्ति मिली और सत्य का सुंदर रूप सामने आया कि मैं ज्योतिर्बिंदु आत्मा अजर-अमर-अविनाशी हूँ; ज्ञान, गुण और शक्तियों का स्वरूप हूँ। जैसे, किसी को फांसी की सजा हो जाए और एक दिन न्यायाधीश अचानक उसको कह दे कि तुम निर्दोष साबित हुए हो, उस वक्त, उस व्यक्ति के आनंद और उत्साह को नापा जा सकता है क्या? यह जैसे कि उसको पुनर्जन्म मिल गया। ऐसे ही, जो इस राज़ को अनुभव कर लेता है कि मैं आत्मा हूँ, शरीर नहीं, वह देह अभिमान जनित अनेक प्रकार की मानसिक पीड़ाओं से मुक्त होकर अतींद्रिय सुख व शान्ति का भंडार बन जाता है। जीते जी पुनर्जन्म पा लेता है।

**अध्याय दो :** काउंसलिंग के अगले कदम पर अपना परिचय देते हुए शिवपिता कहते हैं, मैं परमात्मा शिव हूँ और तुम सब आत्माओं का परमपिता हूँ। मैं ज्ञान का सागर हूँ, सर्व गुणों का सिंधु हूँ और सर्वशक्तिवान भी हूँ। ज्ञान, गुण और शक्तियों का वर्सा आप बच्चों को देकर, घोर कलियुगी मानव से सतयुगी देवता बनाने के लिए मैं आया हूँ। ये केवल महावाक्य ही नहीं बल्कि हजारों हाथियों का बल भरने वाली शक्तिशाली खुराक है। क्योंकि, मनोरोग को बढ़ाने वाला और एक मुख्य

घटक है अनाथपन। उन्हें लगता है कि इस दुनिया में उनको अपना समझने वाला कोई नहीं है, उनसे सभी नफरत करते हैं। जीने की उम्मीद को खत्म करने वाले इस मनोभाव से आदमी डिप्रेशन का शिकार बन जाता है। अनाथपने से तंग होकर लोग जीवघात भी कर लेते हैं। लेकिन, जब इस परमसत्य को जान लेते हैं कि परमात्मा शिव मेरे पिता हैं, वे मेरे लिए ही इस धरती पर अवतरित हुए हैं और मुझे इस दारुण अवस्था से उठाकर, श्रेष्ठ देवता बनाने की जिम्मेवारी उन्होंने ले ली है तब कमजोर व्यक्ति भी खुद को बलवान अनुभव करने लगता है। भगवान मेरा साथी है, इस बात का नशा और मैं देवता बनने वाला हूँ, इस बात का उमंग, उसे सर्व प्रकार की मनोव्याधियों से छुड़ा देते हैं।

**अध्याय तीन :** तीसरे अध्याय में शिवपिता कहते हैं, यह धरती एक बेहद का रंगमंच है। इस पर बना-बनाया सृष्टिनाटक चलता रहता है और पुनरावृत्त होता रहता है। वास्तव में हम सब आत्माएँ परमधाम की निवासी हैं और आपस में भाई-भाई हैं। सृष्टिनाटक में भूमिका निभाने के लिए परमधाम से ही यहाँ आए हैं। यहाँ हर एक अभिनेता को अपनी-अपनी भूमिका मिली हुई है, एक का पार्ट न मिले दूसरे से। इस महावाक्य का राज़ हमें, तेरे-मेरे की कड़ी जंजीर, जो मन की बीमारी की जड़ है, से स्वतंत्र कर देता है। एक तो हम यहाँ के निवासी नहीं हैं बल्कि केवल अभिनेता हैं, हम सभी एक पिता के बच्चे आपस में भाई-भाई भी हैं, साथ-साथ सभी अपने को मिले हुए पार्ट अनुसार अभिनय कर रहे हैं, तो तेरा-मेरा रहा ही कहाँ? इस वास्तविकता का दर्शन, अशांति व उग्रता को मिटाकर, मन को शांत, शीतल और स्थिर बना देता है।

**अध्याय चार :** चौथे अध्याय में शिवपिता, सृष्टि का एक कायदा बताते हुए समझाते हैं कि मनुष्य के सुख और दुख के कारण हैं कर्म। दैवी गुणों पर आधारित कर्म सुकर्म और पांच विकारों अर्थात् काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार के वशीभूत होकर जो कर्म किए जाते हैं, वे हैं

पापकर्म। हर आत्मा की वर्तमान की स्थिति-गति उसके भूतकाल के कर्म पर आधारित है। जैसी करनी वैसी भरनी। सुकर्म का फल है सुख, शांति, संपत्ति और पापकर्म का परिणाम है दुख, अशांति व अभाव। मेरे साथ ऐसा क्यों हो रहा है? लोग मेरे से गलत व्यवहार क्यों करते हैं? मुझे ही क्यों झेलना पड़ता है? ये तीनों प्रश्न, जो आज तक अनसुलझे थे और डिप्रेशन में जाने के दरवाजे बने खड़े थे, उनको शिवपिता ने कर्म का रहस्य समझाकर सुलझा दिया। इससे मैं दुखी हूँ, उससे परेशान हूँ, नहीं। मेरे सुख और दुख का कारण मैं ही हूँ, बाकी सब निर्दोष हैं। यह समझ ऐसे चमकती है जैसे कि बिजली चमकी। मन, प्रश्नचित्त के बदले प्रसन्नचित्त बन जाता है। फिर से उमंग-उत्साह खिलता है। औरों के लिए मन में प्रेम, दया उत्पन्न होते हैं और जीने के लिए एक नई राह मिलती है।

**अध्याय पाँच :** अंत में शिवपिता कहते हैं, यह ड्रामा कल्याणकारी है। इस ड्रामा का हर सेकेण्ड का दृश्य रचयिता शिवपिता को पसंद है। जो हुआ अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह भी अच्छा और जो होगा वह और अच्छा होगा। इस शब्द के साथ शिवपिता काउंसलिंग को पूर्णविराम देते हैं। शिवपिता का यह आखिरी अस्त्र है जो दुख-अशांति को क्षण में भस्म कर देता है। जब पूरा ड्रामा ही कल्याणकारी है और रचयिता को पसंद है तो दुख का अस्तित्व ही कहाँ रहा?

जैसे ही काउंसलिंग पूरी होती है तो जिज्ञासु, केवल नए विचार नहीं बल्कि नया जन्म मिलने का अनुभव करते हैं। मैं कौन, मेरा कौन और मुझे क्या करना है – इन तीनों प्रश्नों का सरल, स्पष्ट और शक्तिशाली उत्तर मिलने के कारण व्यक्ति सर्व प्रकार की खिन्नता से बाहर निकल आता है।

### दवा (मेडिकेशन)

चिकित्सा का दूसरा स्तर है दवा। ईश्वरीय ज्ञान से सत्य और असत्य स्पष्ट होने के कारण, दुख-अशांति के भ्रम से तो हम बाहर आ गए। लेकिन, अन्दर जमा जन्म-जन्मांतर के पाप कर्मों के संस्कार, मन व बुद्धि को फिर से

पाप करने के लिए दुष्प्रेरित करते हैं। इन्हें सदाकाल के लिए नष्ट करने और साथ-साथ दैवी गुण व दैवी शक्तियों का आत्मा में वर्धन करने के लिए दवा है सहज राजयोग।

किसी भी चीज को शुद्ध या उसका नवीनीकरण करने के लिए विधि-विधानों का प्रयोग करना पड़ता है। जैसे कि धातुओं को शुद्ध करने के लिए आग में डालते हैं, बैटरी डिस्चार्ज होने पर उसको बिजली से जोड़ा जाता है, वैसे ही, आत्मा के नवीनीकरण की विधि है सहज राजयोग। इस विधि में मन व बुद्धि को परमात्मा से जोड़ा जाता है, जो सर्वगुणों के सागर और सर्वशक्तिवान हैं।

### राजयोग की विधि

कई बार व्यक्ति, वस्तु या स्थान आँखों के सामने न होते हुए भी हम उनको आँखों के सामने ला सकते हैं। जैसे कि हम कहीं पेन भूल कर आ जाते हैं। जब उसकी याद आती है तब पेन सामने नहीं होते भी वह दिखता है। इसको कहते हैं बुद्धि के नेत्र से देखना या याद करना। इस बुद्धि रूपी नेत्र से खुद को ज्योतिर्बिंदु आत्मा समझकर, ज्योतिर्बिंदु परमात्मा को देखना, यह है सहज राजयोग की विधि। बुद्धि की तार से आत्मा और परमात्मा दोनों जोड़े जाते हैं। जैसे मरीज़ खुद को डॉक्टर के हवाले कर, अचल हो बैठता है तब ही डाक्टर उसका सही तरीके से इलाज़ कर सकता है। वैसे ही, जब हम मन व बुद्धि को शिवपिता के हवाले करेंगे अर्थात् अचल होकर दिल से उनको याद करेंगे, तब पापकर्म का फल जो आत्मा में आसुरी संस्कार के रूप में भरा है और सारी मानसिक बीमारियों का कारण बना है, उसको शिवपिता अपनी शक्ति के प्रयोग से भस्म कर देते हैं। इससे आत्मा पवित्र बन जाती है। साथ-साथ अपने गुण व शक्तियों से आत्मा को इतना भरपूर भी कर देते हैं कि आधे कल्प तक किसी भी मानसिक कमजोरी को झेलना न पड़े। यहाँ बुद्धि की एकाग्रता को दीर्घ समय तक बनाकर रखना बहुत जरूरी है। ■■■



# साया साथ रहेगा ( प्रोफेसर कमल दिक्षित जी के प्रति)

■■■■ ब्रह्माकुमारी निर्मला अग्रवाल, शुजालपुर



मेरे भाग्योदय का स्वर्णिम दिन वह है जब सन् 1975 में शुजालपुर नगर में पहली बार ब्रह्माकुमारी आश्रम खुला। धीरे-धीरे ईश्वरीय ज्ञान मेरे दिल में समाता गया और 1977 में प्रथम बार मधुबन में बाबा मिलन का सुख मिला। परिवार सहित बाबा ने हमें अपना बना लिया और एक-एक को अपने पास बुला कर वरदानों से सुसज्जित किया। छोटी बेटी संगीता उस समय सिर्फ 7 वर्ष की ही थी, बाबा ने उसके लिये कहा, बच्ची देश-विदेश में जाकर बाबा का नाम रोशन करेगी और सारे वरदान आज फलीभूत हो रहे हैं। परिस्थितियाँ तो बहुत आईं लेकिन बाबा का हाथ और साथ सदा बना रहा।

मुझे लेख लिखने का शौक था और मेरा पहला लेख जिसका शीर्षक था, 'जीवन भर काम आते हैं पारिवारिक मूल्य', 'नई दुनिया की नायिका' में जब प्रथम पृष्ठ पर छपा, मेरी खुशी का ठिकाना ना रहा। फिर यह कार्य निरंतर चलता रहा। दूसरी बार जब मैं मधुबन आईं तब वहां प्रोफेसर कमल दीक्षित जी और भ्राता कृष्ण कुमार मौली जी के सानिध्य में मैंने मीडिया प्रभाग में अपना नाम लिखवाया। तीसरी बार जब मधुबन आईं तो क्लास के दौरान प्रोफेसर कमल दीक्षित जी ने हम सभी ब्र.कु. भाई-बहनों को एक विषय पर लेख लिखने हेतु प्रोत्साहित किया और दूसरे दिन सुबह की क्लास में लिखकर लाने को कहा। शाम के 7:00 बज चुके थे और दूसरे दिन सुबह 9:00 बजे की क्लास में जाकर वह लेख देना था। बड़ी चिंता हो रही थी। मैं अपने कमरे में गई, बाबा को याद किया। मन में बस एक ही ख्याल चल रहा था कि मैं अच्छे से अच्छा लेख लिखूँ। मैं लेख लिखती, फिर पढ़ने में मजा नहीं आता तो फाड़ कर फेंक देती। इस तरह करते-करते रात्रि 10:00 बजे तक मैंने जैसे-तैसे लिख कर तैयार किया। सुबह जैसे ही मीडिया

ट्रेनिंग क्लास में जाना हुआ, सभी के लेख एकत्रित कर लिए गए। फिर दो घंटे क्लास चली, तब तक रिजल्ट आ चुका था। रिजल्ट हाथ में आने के पश्चात् प्रोफेसर साहब ने सर्वप्रथम मेरी ओर देखा और मुझे स्टेज पर बुलाया। मेरे हाथ-पांव कांप रहे थे, मैं नीची गर्दन करके खड़ी रही। करीबन 400 ब्र.कु. भाई-बहनों के बीच दीक्षित जी ने बोला, आपके समक्ष निर्मला अग्रवाल है, यह हाउसवाइफ है और हायर सेकेंडरी तक ही पढ़ी है, लेकिन लेख में अपने शब्दों को जिस तरह पिरोया है वह प्रशंसनीय है। उसमें मुझे दस में से नौ नंबर मिले थे। उनके इस उत्साहवर्धन ने मेरा कायाकल्प कर दिया। अब मैं समाचार-पत्र और पत्रिकाओं में लेख भेजने लगी। सारे छपे लेखों की प्रतियाँ आज भी मेरे पास मौजूद हैं। नई दुनिया के भ्राता लाभचंद छाजलानी के पुण्यस्मृति दिवस के उपलक्ष्य में उन्होंने एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था। उसमें कहा गया था कि सन् 2010 से 2011 के बीच किसी भी पत्रिका या समाचार-पत्र में सबसे ज्यादा लेख छपने पर उन्हें जावरा पैलेस में सम्मानित व उत्साहित किया जाएगा। मैंने अपनी लिस्ट बनाकर भेजी, उसमें सर्वप्रथम मैं ही रही। जावरा पैलेस में पत्रकारों और समाजसेवियों के बीच मुझे नगद राशि व मोमेंटो से सम्मानित किया गया। मैंने उस समय प्रोफेसर कमल दीक्षित जी को अपना प्रेरणास्रोत स्वीकार किया। आज भले ही वे हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनका साया सदा साथ चलेगा। भूल नहीं पाएंगे भ्राता जी आपका यह उपकार, जब भी कलम हाथ में होगी याद करेंगे आपको बारंबार। शत-शत प्रणाम। ■■■■

# ईर्ष्या की अग्नि में जलता मानव



■■■ ब्रह्माकुमार जितेंद्र सेठ, सरायपाली, महासमुंद, छत्तीसगढ़

**आ**ज हम देख रहे हैं कि हर जगह, हर मनुष्य आत्मा में कोई न कोई अग्नि लगी हुई है। कहीं काम की अग्नि तो कहीं क्रोध की, कहीं लालसा की अग्नि तो कहीं अभिमान की। इन सब अग्नियों के अलावा एक अग्नि ऐसी भी है जो मनुष्य की असफलता, दुःख और निराशा का कारण बनी हुई है और वो है 'ईर्ष्या की अग्नि'। ये अग्नि बहुत ही खतरनाक है। इस अग्नि में हमारे सपने पूरे होने से पहले ही जलकर राख हो जाते हैं, हमारा लक्ष्य सिर्फ हमारे ख्यालों तक ही रह जाता है और हमारी मंजिल आइने के उस प्रतिबिम्ब की तरह हो जाती है, जिसे हम देख तो सकते हैं पर पा नहीं सकते। ईर्ष्या का संस्कार अधिकांश लोगों में पाया जाता है और किसी-किसी में तो इतने सूक्ष्म रूप में होता है कि वह व्यक्ति स्वयं स्वीकार करने से भी इंकार कर देता है।

## ईर्ष्या नष्ट करती है आंतरिक शक्तियों को

आखिर ये ईर्ष्या अपना प्रभाव दिखाती कैसे है? ईर्ष्या मनुष्य आत्मा के अंतर्मन में छिपी असीम शक्तियों को धीरे-धीरे जलाकर भस्म कर देती है जिससे अंतर्मन पूरी तरह से खोखला और शक्तिहीन हो जाता है। इसके बाद हम अपने को इतने कमजोर अनुभव करने लगते हैं कि हमारी सफलता के मार्ग में आने वाली बाधाओं का भी हम सामना नहीं कर पाते हैं और परिणाम दुःख, निराशा और असफलता के रूप में हमारे समक्ष रहता है।

## ईर्ष्या किससे, कब और क्यों होती है?

सामान्य तौर पर किसी व्यक्ति को ईर्ष्या अपने समीपवर्ती लोगों से होती है, जैसे पड़ोसियों से, मित्र-सम्बंधियों से, रिश्तेदारों से, एक विद्यार्थी को दूसरे विद्यार्थी से, सहकर्मी से, परिजनों से, एक भाई को दूसरे भाई से, देवरानी को जेठानी से, जेठानी को देवरानी से या

ननद से भी ईर्ष्या हो सकती है। जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से स्वयं को किसी क्षेत्र, पद, प्रतिष्ठा, सम्पन्नता या सुविधा इत्यादि में कम आंकता है, तब ईर्ष्या अपना प्रभाव दिखाना प्रारम्भ करती है।

जब किसी व्यक्ति, संगठन या संस्था को सफल होते देख हम अपने मन में उसके प्रति असफलता के संकल्प करने लगते हैं तथा उसकी असफलता पर खुशी व्यक्त करते हैं तब समझ लीजिए कि हम ईर्ष्या से ग्रसित हो चुके हैं और हमारी आंतरिक शक्तियां भी धीरे-धीरे क्षीण होने लगी हैं। इस परिस्थिति में हम अपने मन की ऊर्जा और संकल्प शक्ति का उपयोग स्वयं को सफल करने में लगाने के बजाय दूसरे को असफल करने में लगा रहे होते हैं। अतः हमें चाहिए कि हम अपनी शक्ति को स्वयं को ऊंचा उठाने में लगाएँ, न कि किसी को गिराने में। इस लेख के माध्यम से हम उन लोगों को संदेश देना चाहते हैं जो इस अग्नि में पल-पल जलकर अपने जीवन की खुशियों को पल-पल स्वाहा कर रहे हैं।

## ईर्ष्या से बचने के लिए राजयोग मेडिटेशन

अवचेतन मन का सिद्धांत व आकर्षण का नियम तथा राजयोग की शिक्षा यही सिखाती है कि हम जिस चीज की सराहना करने लगते हैं या पसंद करने लगते हैं वो हमारी तरफ आकर्षित होने लगती है। जब हम किसी की खुशी, सफलता या उपलब्धि के लिए उसको बधाई देते हैं या उसकी सराहना करते हैं, तो हम भी उसकी खुशी का हिस्सा बन जाते हैं। साथ में जब हम राजयोग का नियमित अभ्यास करते हैं तब हमारे मन की शक्तियां बढ़ने लगती हैं और उन्हें हम दूसरों को गिराने या ईर्ष्या में लगाने के बजाय खुशी की तरफ, सफलता की तरफ तथा उपलब्धियों की तरफ लगाने लगते हैं। ■■■

# क्रोध से मुक्ति कैसे हो?



■■■ ब्रह्माकुमारी शीला, तारानगर (राजस्थान)

**क्रो**ध से स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। क्रोध करने से माँसपेशियों में खिंचाव होता है। वैज्ञानिकों के अनुसार, हँसने के लिए चेहरे को 17 माँसपेशियों की आवश्यकता पड़ती है जबकि क्रोधित होने के लिए 43 माँसपेशियों की आवश्यकता होती है।

क्रोध आत्मा का शत्रु है। यह दिलो-दिमाग पर छाकर तुरन्त मनुष्य की बुद्धि हर लेता है। क्रोध में मनुष्य अंधा हो जाता है। इस अवस्था में प्रायः वह सभी गलतियाँ कर बैठता है, बाद में उनका प्रायश्चित्त करता रहता है। अति क्रोधी मनुष्य उस राक्षस के समान हो जाता है जिसको विध्वंस के अलावा कुछ सूझता ही नहीं है।

क्रोध क्यों आता है? इसका संक्षिप्त उत्तर तो यह हो सकता है कि कामना की पूर्ति न होने के कारण क्रोध आता है। दिनचर्या में जब क्रोध आता है तो उसके अन्य अनन्त कारण हो सकते हैं। कई बार अपेक्षा की उपेक्षा से क्रोध आ जाता है, तो कई बार पैदल चलते हुए पत्थर से ठोकर लगने से भी क्रोध आ जाता है। हम पत्थर को ही भला-बुरा कहने लगते हैं जबकि गलती स्वयं की होती है क्योंकि हम देखकर नहीं चल रहे थे।

क्रोध का मुख्य कारण है, दूसरे को अपने दुख का कारण मानना। हम अज्ञानतावश अपने दुख का कारण दूसरे को मानकर उससे घृणा करने लगते हैं। स्नेह भावना की यह कमी ही क्रोध की उत्पत्ति का मूल कारण है। कई बार तो व्यक्ति क्रोध में अपना आपा खोकर अनैतिक कार्य भी कर डालता है। क्रोधी को हमेशा दूसरे की गलती ही दिखाई देती है, स्वयं को वह सही समझता है। गहराई से देखें तो हम पायेंगे कि आज समाज में अधिकतर अपराध व हत्यायें क्रोधवश ही हो रही हैं।

क्रोध से मुक्त कैसे हो सकते हैं? लौकिक दुनिया

में इस संदर्भ में अनेक बातें प्रचलित हैं। जैसे – क्रोध आने पर ठंडा पानी पी लो, सौ तक की उल्टी गिनती शुरू कर दो, मौन रख लो, क्रोध की अवस्था में अपना चेहरा दर्पण में देख लो, स्थान बदल लो आदि-आदि।

लेकिन ये सब बातें कहने में जितनी आसान हैं, प्रैक्टिकल में उतनी ही कठिन हैं। परिस्थिति आने पर शांत बने रहने के लिए बहुत पुरुषार्थ एवं संयम की आवश्यकता होती है। जैसे माँ बच्चे की हजारों गलतियों को भी क्षमा कर देती है क्योंकि निःस्वार्थ स्नेह है बच्चे के लिए। यह निःस्वार्थ स्नेह, सहनशक्ति और क्षमाभाव हमें हर आत्मा के लिए जागृत करना है। स्वयं को जगतमाता, जगदम्बा, शिवशक्ति की ऊंची स्टेज, ऊँचे स्वमान की सीट पर स्थित करना है।

हमें कोई भी परीक्षा देनी होती है, तो पहले से की गई तैयारी काम आती है। हम परीक्षा के समय कुछ भी तैयारी नहीं कर सकते। ठीक इसी प्रकार, परमात्मा से योग लगाकर हमें शान्ति के खजाने को स्वयं में इतना भर लेना है कि कोई भी परिस्थिति आये, हम शान्ति देवा, शान्ति के फरिश्ते बन जायें, हमसे शान्ति के ही प्रकम्पन निकलें।

हम कभी भी रॉयल निगेटिव शब्दों का प्रयोग न करें। जैसे कि मैं क्रोध नहीं करना चाहता, मुझे गुस्सा खत्म करना है...आदि-आदि। हमारा अन्तर्मन शब्दों की नहीं, चित्रों की भाषा समझता है। हमें बहुत शुद्ध पॉजिटिव संकल्प करने हैं जैसे कि – मैं शान्तचित्त आत्मा हूँ, मेरा चित्त शान्त हो गया है, मैं शान्ति-दाता, शान्ति का भण्डार हूँ...।

स्वयं को मन की आँखों से देखें, विजुअलाइज करें, सबसे प्रेम से, शान्ति से काम करते, कराते हुए देखें। इस अभ्यास से धीरे-धीरे आत्मा में शान्ति का गुण इमर्ज होता जायेगा। ■■■



# पुरुषार्थ ही प्रारब्ध है



ब्रह्माकुमारी डॉ. तृप्ति, शान्तिवन

**ह**र एक व्यक्ति चाहे अमीर हो या गरीब, मौजों में ही अपना जीवन व्यतीत करना चाहता है और इसके लिए दिन-रात भरसक प्रयास भी करता है।

## पुरुषार्थ से बड़ी प्रारब्ध

जाहिर-सी बात है कि हम आम का बीज तो नहीं खा सकते लेकिन जब उसी बीज को उपजाऊ भूमि में बो देते हैं, जरूरी खाद-पानी दे करके उसका पोषण करते हैं तब एक दिन वह वृक्ष बन जाता है और उससे बहुत ही मीठे-स्वादिष्ठ आम मिलते हैं। आम का आनंद उठाते समय हम इस दिन तक किए गए अपने परिश्रम को भूल जाते हैं और स्वाद रूपी प्रारब्ध भोगने में मस्त हो जाते हैं। हमें लगता है कि सुख है तो प्रारब्ध में ही है क्योंकि पुरुषार्थ करते वक्त हमें उस सुख की अनुभूति नहीं हुई थी इसलिए कई लोग प्रारब्ध को पुरुषार्थ से बड़ी मानते हैं।

## प्रारब्ध से बड़ा पुरुषार्थ

परंतु जरा सोचिए, क्या पुरुषार्थ किए बिना प्रारब्ध पाई जा सकती है? जैसे यदि कोई विद्यार्थी सालभर पढ़ाई ना करे, परीक्षा की अच्छी तरह तैयारी ना करे तो क्या मनचाहा सकारात्मक परिणाम पा सकेगा? हम भविष्य के लिए केवल ऊंचे-ऊंचे सपने ही देखें परंतु वर्तमान में उस दिशा में कोई ठोस कदम ना उठाएं तो क्या सपने कभी साकार हो पाएंगे? यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में दान-पुण्य न करे तो क्या उसका अगला जन्म संपन्न परिवार में हो पाएगा? नहीं ना। इसीलिए कुछ लोगों का मानना है कि प्रारब्ध से बड़ा पुरुषार्थ होता है क्योंकि पुरुषार्थ ही वह रास्ता है जो प्रारब्ध रूपी मंजिल तक जाता है।

## तीसरी मान्यता

उपरोक्त दोनों मान्यताओं से भिन्न एक तीसरी मान्यता भी है, जो सत्य के ज्यादा निकट नजर आती है और वह यह है कि हमारा पुरुषार्थ ही हमारी प्रारब्ध होता है। कैसे? हमने एक वृद्ध किसान की कहानी सुनी है, जो

आम की गुठली बो कर, रोज उसे खाद-पानी आदि देकर संभाल करता था। एक बार किसी व्यक्ति ने उस वृद्ध किसान से पूछा कि आम के इस पेड़ के बड़े होने और उसको फल लगने से पहले ही आप इस दुनिया से चले जाएंगे फिर इतना परिश्रम क्यों कर रहे हैं? तब वृद्ध किसान ने कहा, भाई, मैं ना सही लेकिन मेरे नाती-पोते अवश्य फल खाएंगे। तो देखिए, यह किसान पुरुषार्थ करने में ही इतनी खुशी महसूस कर रहा है मानो उसे प्रारब्ध मिल गई हो।

एक बार एक ओलंपिक चैंपियन बॉक्सर से पूछा गया कि आप तब क्या करते हैं जब आपका प्रतिद्वंद्वी अभ्यास कर रहा होता है? उन्होंने कहा, अभ्यास। उनसे फिर पूछा गया कि आप तब क्या करते हैं जब आपका प्रतिद्वंद्वी विश्राम कर रहा होता है? उन्होंने कहा, अभ्यास। फिर उनसे पूछा गया कि आप तब क्या करते हैं जब आप मैच जीत जाते हैं? तब भी उन्होंने कहा, अभ्यास। यहाँ भी देखिए, जीत प्राप्त हो जाने के बाद भी, जीत की खुशी मनाने से भी ज्यादा खुशी या संतुष्टि उस चैंपियन को अपने पुरुषार्थ अर्थात् अभ्यास से मिल रही है। दूसरे शब्दों में, उसको पुरुषार्थ में ही अपनी प्रारब्ध का आनंद प्राप्त हो रहा है।

## प्रारब्ध, पुरुषार्थ की परछाई मात्र

भविष्य प्रारब्ध तो वर्तमान पुरुषार्थ की परछाई मात्र है, असली सुख, असली मौज केवल वर्तमान के कर्म में ही है। इसीलिए कहा जाता है कि कल कभी नहीं आता। आज का पुरुषार्थ हमें अनुभव की अर्थारिटी बना देता है जिसे भविष्य में कार्य में लगाकर हम जीवन को सफल बना सकते हैं। अतः पुरुषार्थ माना अभी भी मौज और भविष्य में भी मौज। इसके लिए हमें अपना दृष्टिकोण बदलना होगा ताकि हम वर्तमान पुरुषार्थी जीवन में ही प्रारब्ध का अनुभव कर सकें।

हमारा वर्तमान, हमारे अतीत की परछाई है और हमारा भविष्य, हमारे वर्तमान की परछाई है। यदि हम भविष्य में सुख-शांति से पूर्ण जीवन चाहते हैं तो हमें वर्तमान को सुख-शांति से पूर्ण बनाना होगा और इसके लिए हमें घर-परिवार में रहते, अपना कारोबार करते हुए अपने आध्यात्मिक पहलू का भी विकास करना होगा क्योंकि आध्यात्मिकता ही जीवन में स्थाई सुख-शांति ला सकती है। इस सृष्टि रंगमंच पर पुरुष अर्थात् आत्मा और प्रकृति के पांचों तत्वों का यह सुंदर खेल चल रहा है। खेल में हार-जीत तो होती है परंतु एक आध्यात्मिक पुरुषार्थी दुःख-सुख, निंदा-ग्लानि आदि सभी परिस्थितियों में संतुष्ट रह सकता है।

### आध्यात्मिकता क्या है?

अपने वास्तविक आत्मिक स्वरूप में स्थित रहना ही आध्यात्मिकता है। जब आत्मा अपने वास्तविक स्वरूप में स्थित रहती है तब अपने मूल सात गुण – ज्ञान, पवित्रता, शांति, प्रेम, खुशी, आनंद और शक्ति का निरंतर अनुभव कर पाती है। आत्मिक स्वरूप में टिक कर ही हमें अनुभव होता है कि जिस सुख-शांति या प्रेम की तलाश हम बाहर कर रहे हैं, वास्तव में वे तो हमारी निजी संपत्ति हैं। स्वरूप में टिकने के बाद ही जब हम अपने पिता परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिंदु शिव को परमधाम में याद करते हैं तो हममें ईश्वरीय गुण और शक्तियां आने लगती हैं जिससे हमारा जीवन सुखमय बन जाता है। हम मौजों का अनुभव करने लगते हैं। परमात्मा पिता की निरंतर याद हमें निर्भय और निश्चित बना देती है। इस आध्यात्मिक पुरुषार्थ से वर्तमान के साथ-साथ हमारे भविष्य के अनेक जन्मों की भी श्रेष्ठ प्रारंभ बन जाती है।

जिस प्रकार एक बीज में ही फल समाया हुआ होता है, इसी तरह से पुरुषार्थ रूपी बीज में ही प्रारंभ रूपी फल समाया हुआ होता है इसलिए पुरुषार्थ ही प्रारंभ है। ■■■

## आध्यात्मिक शिक्षा की उपयोगिता

पृष्ठ 17 का शेष भाग ....

हैं। कुछ समय बाद एक अखबार में खबर आई कि उसी विद्यालय के वही संचालक महोदय, गांव वालों के द्वारा स्कूल में आपत्तिजनक हालत में पकड़े गए। अब बताइए, विद्यालय के लिए अनुपयोगी कौन-सी बात है?

### सर्व आत्माओं का धर्म एक है और वह है शांति

जब हम कहते हैं, हम धर्मनिरपेक्ष हैं तो इसका अर्थ क्या है? यह बात ठीक है कि दैहिक धर्मों की भीड़ में से किसी एक धर्म के सिद्धांत को हम पढ़ाएं तो विद्यालय में एकता और सामंजस्य नहीं रह पाता परंतु देह से परे आत्मा का भी तो धर्म है, जो सबका एक है। उसे तो अपनी शिक्षा प्रणाली में अनिवार्य रूप से शामिल किया जा सकता है! जैसे संपूर्ण जगत का मालिक एक है, सूर्य भी एक है, चंद्रमा भी एक है, धरती एक है, उसी प्रकार सारे विश्व की सर्व आत्माओं का धर्म भी एक है और वह है शांति। हिंदू-मुस्लिम-सिख-ईसाई सभी को हर समय, हर स्थान पर शांति की ही कामना रहती है। जैसे जल का धर्म शीतलता है वैसे ही आत्माओं का धर्म शांति है। कोई व्यक्ति 24 घंटे शांति में तो रह सकता है पर 24 घंटे अशांति में रहना असंभव है।

### आध्यात्मिक शिक्षा ही सच्ची शिक्षा

शांति ही अन्य सभी गुणों की जननी है। शांति और समृद्धि तब आती है जब जीवन में पवित्रता हो। पवित्रता के लिए यह ज्ञान हमारे हर श्वास-श्वास में रचा-बसा हो कि हम एक पिता के बच्चे आत्मिक नाते से भाई-भाई हैं। जहां भाई-भाई की भावना विकसित हो जाती है वहां हिंसा, लूट, काम, क्रोध, लोभ रह ही नहीं पाते। शिक्षा का उद्देश्य भी तो यही है कि वह समाज को, व्यक्ति को विकारमुक्त बनाए। शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा गया है। वेद कहता है, 'नास्ति विद्या समं चक्षु' अर्थात् विद्या अद्वितीय नेत्र है। इन दो आंखों से जो नहीं दिखता वह विद्या रूपी नेत्र से दिखता है। विद्यावान व्यक्ति को समाज का सच दिखाई देता है। वह समस्याओं को ऊपर से नहीं, जड़ से पकड़ कर समाधान सोचता है। आज की समस्याओं की जड़ है दैहिक दृष्टि, दैहिक आकर्षण, इनसे जो पार ले जाए वही सच्ची शिक्षा है। इस अर्थ में आध्यात्मिक शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है जो भौतिक जगत में रहते भी मानव को बुराइयों से अछूता रहना सिखाती है। ■■■

# समाने की शक्ति

■■■ ब्रह्माकुमारी स्वाति, निगडी, पुणे



समाने की शक्ति का सबसे सुंदर उदाहरण है सागर। सागर में नदियाँ तो क्या, सभी प्रकार का कचरा भी डलता है, जहाज भी डूब जाता है पर सागर की सतह पर उसका असर दिखाई नहीं देता।

किसी भी प्रकार की हलचल, असंतुष्टि, नाराजगी या अशांति का एक मात्र कारण यही है की घटनाएँ या बातें या व्यवहार हमारे मन में संकल्पों-विकल्पों के रूप में तैरते रहते हैं, हम उन्हें समा नहीं पाते हैं। समाने की शक्ति के अभाव में बार-बार उनका चिंतन, चिंता की चिंता बन जाता है। स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने की होड़ में हम व्यस्त हो जाते हैं। इतना करने के बावजूद भी खुशी या हल्कापन कहां प्राप्त होता है? क्योंकि इस सारी खींचातानी में हम खुद का सम्मान और स्वमान कब का खो चुके होते हैं।

जिनमें समाने की शक्ति का अभाव होता है वे नकारात्मक वृत्ति वाले, वाचाल और शीघ्र प्रतिक्रियाकारी हो जाते हैं। अंत में उन्हें अकेलापन और कमजोर मानसिक स्थिति के सिवाय कुछ प्राप्त नहीं होता। इसलिए समय अनुसार समाने की शक्ति का आत्मा में होना आवश्यक है। समाने की शक्ति का संबंध विशाल मन से है। हमारे साथ चाहे जो भी हुआ हो, हो रहा हो, न्यायकारी या अन्यायकारी, उसे मजबूत मन से स्वीकार कर कोई प्रतिशोध, प्रतिकार न करते हुए अपनी शांत स्थिति में रहना ही समाना है। समाने की शक्ति यूँ ही नहीं आती है।

शक्ति, शक्ति बनती तब है जब अनेकों गुणों का कर्मों में प्रयोग होता है। साधारण रूप से समाने की शक्ति वहाँ बहुत आवश्यक हो जाती है जहाँ परिस्थितियाँ हमारे विपरीत हों। वहाँ बड़े ही धैर्य और संयम से संभलना होता है।

हम दूसरों के असफल प्रयासों को, व्यवहार को और गलतियों को अन्य लोगों को विस्तार से सुनाने की

चेष्टा में लग जाते हैं परंतु यह ठीक नहीं है। ऐसी परिस्थिति में आत्मभाव से, उनकी सारी नकारात्मक बातों को सकारात्मक भाव में परिवर्तन करना ही समाना है। समाने की शक्ति हमें तब भी कार्यान्वित करनी है जब हमें प्रशंसा के बहुत मीठे फल मिले रहे हों। जहां बहुत कार्य सफल किए हों वहां भी सब कुछ समा कर, नम्र स्वरूप धारण कर केवल परमात्मा का गुणगान करें।

## समाने की शक्ति धारण करने वाली आत्मा के गुण

हर एक आत्मा का अपना-अपना पार्ट है, इसमें निश्चय बुद्धि। हर एक आत्मा के साथ कर्मों का हिसाब है, जो चुक्ता हो रहा है। स्वयं को जिम्मेदार अनुभव कर क्षमा करना या क्षमा मांगने के अभ्यासी। बड़ा दिल अर्थात् ज्ञान की हर प्वाइंट को प्रैक्टिकल में याद करते हुए आगे बढ़ने वाला।

समाने वाला ही बाप समान है। समाना, पावन गंगा बनने के जैसा है। समाना अर्थात् सर्व को गले लगाना, स्वीकार करना, अपनी शुभ वृत्ति से परिवर्तन करना। समाना श्रेष्ठता की निशानी है। समाने वाले ही महान हैं। इस सृष्टि नाटक में जो जैसा है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर, उसे आगे बढ़ाने की भावना ही समाने की शक्ति है। ■■■

हम सही बात दूसरे को समझाने में इसलिए असफल रहते हैं क्योंकि हम समझाने से ज्यादा उसे गलत साबित करने या उसके अहंकार पर चोट करने का भाव अधिक रखते हैं

# धैर्य का फल मीठा



■■■ ब्रह्माकुमार अशोक पंडित, शान्तिवन

परिवार और समाज में रहते हुए आपसी सम्बन्धों के बीच कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है। जब पूछा जाता है कि यह सब कैसे हुआ, तो पता चलता है कि बातें बहुत छोटी थीं लेकिन उनको सही तरीके से न समझने के कारण धैर्य खो दिया और परिणाम यहाँ तक ले आया। धैर्य मनुष्य के व्यक्तित्व को ऊंचा उठाने वाला उत्तम गुण है। किसी भी पेड़ में जबरदस्त धैर्य होता है तभी वह एक जगह खड़ा रहकर हर मौसम को झेलता हुआ भी मीठे फल देता है। नदियों में भी बहुत धैर्य होता है, तभी तो वे हजारों किलोमीटर तक चलकर अपने लक्ष्य अर्थात् सागर को प्राप्त कर लेती हैं। जब पेड़-नदी आदि प्राकृतिक चीजों में इतना धैर्य होता है तो ईश्वर की बनाई सर्वोत्तम कृति हम मनुष्यों में भी धैर्य कूट-कूट कर भरा होना चाहिए।

## धैर्य से आती है समरसता

धैर्य शब्द है बहुत छोटा लेकिन बहुत ही हितकारी है। पारिवारिक, सामाजिक व व्यवहारिक जीवन में धैर्य को अपना लिया जाए तो सम्बन्धों की कड़वाहट, मनमुटाव, दूरियाँ आदि सदा के लिए समाप्त हो, प्रेम, मधुरता और समरसता आ जाती है। धैर्य हमें समझ देता है और सोच-समझ कर किया गया कार्य सफलता का साधन बन जाता है। किसान खेत में बीज बोता है, गेहूँ का बीज बोया तो तीन महीने तक, आम का बीज बोते हैं तो तीन साल तक और नारियल उगाया तो 7 साल तक धैर्य की आवश्यकता होती है। इसके बाद ही फल की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार सच्चाई, ईमानदारी और वफादारी से किए गए कार्यों का फल प्राप्त करने के लिए भी परिश्रम और धैर्य की जरूरत होती है। आज का मनुष्य चाहता है कि छू-मंत्र हो जाए, बिना परिश्रम के ही सब कुछ मिल

जाए। अधैर्य असन्तुलित जीवन का परिचायक है। ऐसा जीवन गलत तरीके से सफलता की ओर अग्रसर होता है, जिसके परिणाम भयावह होते हैं।

## व्यक्तित्व का निखार मूल्यों से ही होता है

संगदोष, लोभ-लालच या गलत इच्छाओं के गुलाम होकर सफलता प्राप्त कर भी ली तो बाद में जीवन में निराशा आ जाती है। इस कारण, जिस आशा और विश्वास का सहारा लेकर आगे कदम बढ़ाया था, वे स्वप्न तक ही सिमट कर रह जाते हैं। फिर भी एक अवसर जरूर आता है। यदि व्यक्ति धैर्य बना कर रखे तो अवश्य ही आशा की किरण जीवन में आ जायेगी। किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके व्यक्तित्व से होती है। व्यक्तित्व का निखार तभी होता है जब मूल्यों का विकास हो। मूल्यों का विकास संयम धारण करने से होता है। इसके लिए धैर्यवान होना अति आवश्यक है। जैसे किसान जमीन में बोए गए बीज का हर प्रकार से संरक्षण करता है, इसी प्रकार, बुद्धिरूपी धरती में बोए गए धैर्य रूपी गुण के विकास के लिए भी सहनशीलता, आशा, सकारात्मकता आदि गुणों के संरक्षण की जरूरत होती है।

## बातों को पकड़ने से प्रगति रुक जाती है

धैर्य मनुष्य जीवन के लिए वरदान है। जो यह फल खाता है वह सदा आनन्द के झूले में झूलता रहता है। धैर्यवान जीवन के हर क्षेत्र में सफल हो पाता है, जीवन की हर चुनौती का सामना कर सकता है। एक गीत है, 'धीरज धर मनुवा, तेरे सुख के भरे दिन आयेंगे ...'। 'परमात्मा पिता हमें धैर्य देते हैं कि सुख के दिन आने ही वाले हैं। जीवन में छोटी-बड़ी घटनायें घटती रहती हैं, तब कोई भी हितैषी यही कहता है कि



भाई, धीरज रखो, सब ठीक हो जायेगा। समय को बलवान कहा गया है। हम और आप रुक जाते हैं लेकिन समय किसी के लिए रुकता नहीं है। हम सबको भी समय से सीखना चाहिए। जीवन में जो भी बातें आती हैं, उन्हें पकड़ें नहीं, बातों को पकड़ने से स्वयं की प्रगति रुक जाती है। किसी चीज का अभाव जब महसूस होने लगे तो अधैर्य मत बनो। जीवन परमात्मा का दिया हुआ उपहार है। ईश्वरीय उपहार को सुन्दर पुष्प की तरह बनाना है। इसके लिए धैर्य की आवश्यकता है।

एक बार एक साधु महाराज, अपने शिष्यों को लेकर जंगल के रास्ते से जा रहे थे। दोपहर का समय था, कड़ाके की धूप थी, तेज प्यास भी लग रही थी। तभी एक छायादार वृक्ष देखकर वे सभी बैठ गये। साधु ने अपने शिष्य को कहा, पास में एक झरना बह रहा है, वहां जाकर सभी के लिए पानी ले आओ। शिष्य पानी लेने के लिए झरने की तरफ गया लेकिन उसने देखा कि बहुत से जानवर झरने के इकट्ठे हुए जल में विचरण कर रहे हैं जिससे पानी बहुत गंदा हो गया है, पीने योग्य नहीं रहा है। वह बिना पानी लिए ही वापस आ गया। साधु महाराज जी ने पूछा, क्या आपको पानी मिला? शिष्य ने बताया कि कुछ जानवरों की उपस्थिति से पानी बहुत गंदा हो गया है, मैं दूर से नदी से पानी ले आता हूँ। इस पर साधु महाराज ने कहा कि तुम्हें झरने से ही पानी लेकर आना है, नदी काफी दूर है। शिष्य पानी लेने दोबारा झरने के पास गया तो देखा कि जानवर तो वहां नहीं हैं लेकिन पानी अभी भी गंदा है, वह फिर वापस आ गया। साधु महाराज ने पूछा, आप खाली हाथ क्यों आए? शिष्य ने बताया कि अभी भी पानी गंदा है, पीने योग्य नहीं है। कुछ समय बाद साधु महाराज ने कहा, फिर से जाओ, शिष्य फिर पानी लेने गया तो देखा कि झरने का पानी बहुत साफ हो गया है। पानी में जो गंदगी थी वह नीचे बैठ चुकी थी। वह पानी लेकर साधु महाराज के पास आ गया। साधु महाराज ने कहा, झरने का गंदला पानी स्वच्छ हो, उसमें उभरी मिट्टी नीचे बैठे, इसके लिए हमें धैर्य रखना पड़ा पर इस धैर्य का फल मीठा निकला। यदि नदी से पानी लेकर आते तो दूर

जाना पड़ता। इसी प्रकार जीवन में कभी-कभी धैर्य रखना अनिवार्य हो जाता है, जल्दबाजी से कई बार सफलता दूर हो जाती है। ■■■

## श्रद्धांजलि



हम सबकी अति स्नेही, साकार मम्मा-बाबा की गोद में पली हुई, ईश्वरीय सेवाओं की आदिरत्न, तिनसुकिया (आसाम) सबज़ोन की निर्देशिका मीठी सत्यवती बहन ने 9-4-21, प्रातः 3 बजे अपना पुराना शरीर छोड़ प्यारे बापदादा की गोद ली। आपकी आयु करीब 90 वर्ष थी।

सन् 1957 में आपने उत्तर प्रदेश की धरनी से ज्ञान प्राप्त किया। आप 1969 में ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित हो गईं। आपने पहले कुछ समय मधुबन में अपनी सेवायें दी, उसके बाद भारत के विभिन्न स्थानों पर तथा नेपाल में अपनी सेवायें दी। तत्पश्चात् परदादी निर्मलशान्ता जी के साथ कोलकाता में सेवायें देते हुए, 1975 से पूर्वोत्तर क्षेत्र आसाम में तिनसुकिया से सेवायें प्रारम्भ कीं। वहाँ से ही अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मिजोरम में भी कई सेवाकेन्द्र खोलने के निमित्त बनीं। आपने अनेक कुमारियों को मातृ स्नेह देते हुए ज्ञान-योग से बहुत अच्छी पालना करके उन्हें बेहद सेवाओं में समर्पित करवाया। हजारों ब्रह्मावत्सों को भी सशक्त बनाया। आप समय प्रति समय सेवाओं के अनेक बड़े कार्यक्रमों का भी आयोजन करती रहीं।

आपका मधुबन बेहद घर से, मधुबन निवासियों से विशेष स्नेह था। आपने अपने बड़े दिल, सरल स्वभाव, हर्षितमुख चेहरे से सभी की दुआयें प्राप्त कीं। ऐसी सर्व स्नेही, त्याग, तपस्या और बेहद सेवा की मूर्ति, महान आत्मा को सम्पूर्ण दैवी परिवार स्नेह भरी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

# भोजन पर विचारों का प्रभाव



■■■ ब्रह्माकुमार संजय हंस, दिल्ली (ओ.आर.सी.)

**अ**न्न पैदा होने से भोजन बनने तक अनेकों आत्माओं का सहयोग प्राप्त होता है। इन सबके विचार, जीवन में आने वाली परिस्थितियों के अनुसार चलते रहते हैं। भोजन में इन विचारों का प्रभाव समा जाता है, कई बार उनमें निगेटिव विचार भी हो सकते हैं।

यदि हम भोजन पर पड़े हुए उन सबके विचारों के प्रभाव से मुक्त होना चाहते हैं, अपने जीवन में शांति का अनुभव करना चाहते हैं तो कृपया भोजन जैसे ही हमारी थाली में आए, हम भोजन को दृष्टि देते हुए मन में अन्दर ही अन्दर सकारात्मक विचारों को चलाएँ कि मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ, शांति के सागर ईश्वर की संतान हूँ। मेरे प्रियतम प्यारे परमात्मा, जितनी भी आत्माओं ने इस भोजन को मुझ तक लाने में सहयोग दिया है उन सबका भला हो, इस भोजन को आप शांति, प्रेम, आनन्द की शक्ति से भरपूर कर रहे हो। इस चिंतन से स्वयं को अनुभव होगा कि मुझसे शांति, प्रेम, आनन्द की शक्ति भोजन में समा रही है। एक मिनट इस चिंतन से भोजन को शुद्ध करें।

दाता ईश्वर को भोजन अर्पण करें, स्वीकार कराएँ और मौन में रह कर उनकी याद में भोजन करें। इससे कुछ ही महीने में आप अनुभव करेंगे कि आपका मन

शांत एवं हल्का रहने लगा है और स्वयं के अन्दर सर्व के प्रति प्रेमभाव, सेवाभाव, करुणाभाव, दयाभाव, अपनापन जगने लगा है। अगर भोजन बनाते समय व भोजन खिलाते समय परमात्मा की याद बनी रहे तो अहो सौभाग्य, इससे परिवार का वातावरण शांति, प्रेम, खुशियों से भर जाएगा। इसके लिए भोजन बनाते समय जैसे मसाला डालते हैं वैसे ही एक-एक गुण, शक्ति को भोजन में समाते हुए अनुभव करें। बस, आपके नयनों से शुद्ध प्रकम्पन भोजन में जाने लगेंगे। पिता परमात्मा से मन ही मन बातें करें कि ये भोजन आपके लिए व आपके बच्चों के लिए बना रहे हैं, इसे खाने वाले का मन शांत, शुद्ध, पवित्र, निर्मल हो जाए।

ऐसा अनुभव लाखों लोगों का है। जिसने भी इस प्रयोग को किया उसका जीवन बदल गया। सात्विक विचारों से, सात्विक भोज्य पदार्थों को बनाना ही प्रभु प्रसाद बनाना है। हर आत्मा ज्ञान स्वरूप, पवित्र स्वरूप, शान्त स्वरूप, प्रेम स्वरूप, सुख स्वरूप, आनन्द स्वरूप और शक्ति स्वरूप है। ये गुण हर आत्मा में स्वतः समाए हए हैं केवल चिंतन कर जगाने हैं। अब स्वयं को जगाएँ, यही आध्यात्मिक विज्ञान है। ■■■

## सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-  
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

## शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510  
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

## For Online Subscription:

Bank : State Bank of India, A/c Holder Name : Gyanamrit, A/c No: 30297656367  
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

☺ अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र : ☺

Mobile: 09414006904, 09414423949, Email: hindigyanamrit@gmail.com, omshantipress@bkivv.org

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंगप्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।

मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, सह-सम्पादक - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :

E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in





**हैदराबाद-** विश्व महिला दिवस पर ब्र.कु. कुलदीप बहन को सम्मानित करते हुए मेयर बहन विजयलक्ष्मी, डिप्टी मेयर बहन लता रेड्डी, आईआरडीएस के अध्यक्ष भ्राता विनय कुमार तथा हैदराबाद की पार्श्व बहनें।



**भावनगर (चित्रा जीआईडीसी)-** सेवाकेंद्र के आधारशिला समारोह में भूमि शुद्धिकरण करते हुए ब्र.कु. सरला बहन, ब्र.कु. तृप्तिबहन, स्वामी त्याग वैराग्यनंदजी तथा अन्य।



**जयपुर (राजा पार्क)-** महिला दिवस कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए प्राचार्या बहन गीता मलिक, गायिका डॉ. बहन आकांक्षा कटारिया, ब्र.कु. पूजा बहन, ब्र.कु. पूनम बहन, राजस्थान महिला आयोग अध्यक्षा बहन सुमन शर्मा, अंतर्राष्ट्रीय कलाकार बहन गुलाबो सपेरा, डॉक्टर खुशबू कपूर तथा अन्य।



**हाँसी-** महाशिवरात्रि महोत्सव का शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. लक्ष्मी बहन, विधायक भ्राता विनोद भयाना, एसडीएम डॉ. जितेंद्र सिंह, नगरपालिकाध्यक्षा बहन निर्मला सैनी तथा अन्य।



**रेवाड़ी (सेक्टर 4)-** शिवध्वजारोहण करने के बाद ईश्वरीय स्मृति में है विधायक भ्राता लक्ष्मण जी, ब्र.कु. उर्मिला बहन, ब्र.कु. वृजेश बहन, ब्र.कु. निर्मला बहन तथा अन्य।



**रानीवाड़ा (भीनमाल)-** 'विश्वशांति के लिए युवा' कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए विधायक भ्राता नारायण सिंह देवल, उपखंड अधिकारी भ्राता कैलाश चंद्र अग्रवाल, उपप्रधान भ्राता महादेव राम देवासी, ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. सुनिता बहन तथा अन्य।





## भावपूर्ण श्रद्धांजलि

राजयोगिनी ईशू दादी जी (01/05/1928 – 06/05/2021)



▲ साकार बाबा के साथ  
▼ दादी प्रकाशमणि जी के साथ



अव्यक्त बापदादा के साथ ▲  
दादी जानकी जी के साथ ▼



देवी माता जी के साथ

